

कलजुग महि कीरतनु परधाना ॥ गुरुमुखि जपीअै लाडि धिआना ॥ (भाग १)

गुरू गरंथ साहिब अनुसार कीरतन दी प्रीभाशा

Definition of Kirtan according to Guru Granth Sahib

लेख दा आरंभ

लेख दा संखेप

लेख दा सार, निचोड़ जाँ मंतव

दुनीआँ विच आम लोकाँ नूँ प्रभावित करन लडी ते लोकाँ दे मनोरंजन करन लडी कवितावाँ, गीत, कवालीआँ, आदि बहुत समें तौ प्रचलत हन। गुरू साहिबाँ दे समें विच कीरतन ते ढाडीआँ दीआँ वाराँ वी आरंभ कीतीआँ गडीआँ सन। इन्हनूँ नूँ असरदार तरीके नाल पेश करन लडी अकसर कडी तरहाँ दे दुनिआवी साज वी वरते जाँदे हन, जिहड़े कि तार, चमड़ा, धात, घड़ा, फूक आदि नाल वजदे हन। सिख धरम विच गुरू नानक साहिब दा साथ देण वाला पहिला कीरतनीआँ भाडी मरदाना जी सन, जिहड़े रबाब वजाडिआ करदे सन।

आम तौर ते लोकाँ नूँ सुणाउण लडी, मनोरंजन करन लडी ते प्रभावित करन लडी पूरी दुनीआँ विच बहुत तरहाँ दे गीत प्रचलत हन। अजकल गीताँ दी वरतौ मन नूँ खिंडाउण लडी ते काम वासना नूँ उतेजित करन लडी वी बहुत वरती जाँदी है। लोकाँ नूँ होर प्रभावित करन लडी गीत दे नाल नाल इशारे वी कीते जाँदे हन, जाँ अजकल नचणा ट्पणाँ वी बहुत आम प्रचलत हो गिआ है।

आम लोक गीताँ ते कीरतन विच बहुत भारी अंतर है। कीरतन दा मंतव है कि आपणे आप नूँ गुरू दे सनमुख भेट करना है ते करते दी सिफत सालाह करनी है, आपणे अंदर, उस अकाल पुरखु वरगे गुण पैदा करके आपणे जीवन नूँ सिधे रसते पाउंणा है ते इह मनुखा जनम सफल करना है। कीरतन दा मुख मंतव इह है, कि आपणे मन नूँ गुरू दे सबद अनुसार सोझी देणी है, मन नूँ सिधे रसते ते पाउंणा है, ते नाल दी नाल काम ते होर विकाराँ ते काबू पाउंण लडी बिबेक बुधी हासल करनी है। कीरतन दा मंतव मन ते काबू करना है, डिसे लडी कीरतन विच मन नूँ खिंडण तौ रोकण लडी इशारे जाँ नचणा ट्पणाँ बिलकुल नहीं वरतिआ जाँदा है। गुरबाणी अनुसार कीरतन आपणे मन नूँ सेध देण लडी ते आपणे आप नूँ सुधारन लडी कीता जाँदा है।

भाडी गुरदास जी दी हेठ लिखी वार सपशट करदी है, कि गुरू नानक साहिब नाल सिरफ भाडी मरदाना जी सन ते होर कोडी दूसरा विकती नाल नहीं सी। भाडी मरदाना जी रबाब वजाउंटे सन ते गुरू नानक साहिब बाणी उचारन करदे सन।

इक बाबा अकाल रूप दूजा रबाबी मरदाना ॥३५॥ (१-३५-२)

भाडी मरदाना जी कोल किसे तरहाँ दा कोडी हारमोनीअम नहीं सी। हारमोनीअम दी देण ताँ अंगरेजाँ दी है, जिस नूँ उह इसाडी धरम दा प्रचार करन लडी वरतदे सन। भाडी गुरदास जी दी वार विच ताँ किसे तबले वजाउंण वाले दा वी कोडी जिकर नहीं है। इह सभ कुझ बाअद विच प्रचलत कीतीआँ गडीआँ हन, ताँ जो सिख सबद गुरू नालों टुट के साजा नाल जुड़ जाण। अजकल इही कुझ हो रिहा है, सिरफ साज वजाउंण वालिआँ ते गाइन करन वालिआँ दी ही कीमत है, सबद दी कोडी कीमत नहीं रहि गडी है। भावें उही सबद गाइन कीता जा रिहा होवे, परंतू प्रबंधक ते आम लोक, मशहूर रागीआँ नूँ उमे सबद लडी हजाराँ दी गिणती विच पैसे देंदे हन, आम रागी नूँ सैकड़िआँ दी गिणती विच, ते किसे बीबी जाँ बूचे नूँ कुझ वी नहीं देंदे हन। अजकल प्रचार वी इस तरहाँ कीता जा रिहा है कि लोकाँ दे दिलाँ विच सिरफ रागीआँ बारे ही मशहूरी कीती जाँदी है ते गुरबाणी नूँ कोडी विरला ही तवजों देंदा है। रागीआँ दे साहमणे माडीक (Microphone) इस लडी रूखिआ जाँदा है, ताँ जो गुरबाणी दा सबद दूर तक सुणाडी दे जावे। अजकल जिआदातर बोलण वाला सिरफ इक ही हुंदा है ते दूसरा साथी घट जाँ हौली बोलदा है, तीसरा तबले वाला अकसर गूंगा ही हुंदा है। तबले वाले दा ना बोलण दा पोल ना खुल जावे, इस लडी कुझ समें तौ इक माडीक तबले वाले अगे रूखण दी बजाडे, दो माडीक दोवें तबलिआँ अगे रूखण दा रिवाज पा दिता गिआ है। पहिलाँ ताँ गुरबाणी दा सबद कुझ कु सुणाडी दे जाँदा सी, परंतू अजकल तबले दी आवाज कडी वारी इतनी जिआदा हुंदी है, कि समझण दी गल ताँ दूर, कडीआँ नूँ ताँ कनाँ विच उंगलीआँ पाणीआँ पै जाँदीआँ हन।

जे कर जुगाँ दी वंड करन वालिआँ अनुसार वेखीडे ताँ इस कलजुग दे समें विच कीरतन ही इक परधान करम है। जे कर मनुख दी मनु दी अवसथा अनुसार जुगाँ दी वंड करके वेखीडे ताँ इस कलजुग दी अवसथा विच, जदों कि मनुख दा मन त्रिशना दी अग विच सड़ रिहा है ते उस नूँ प्रेरना देण वाले कूड़ दा पसारा वी चारे पासे तौ है ताँ अजेही सथिती विच मनुख दा पार उतारा वी सिरफ गुरबाणी अनुसार कीते गडे कीरतन नाल ही हो सकदा है। इस लडी गुरू दी सरन विच आ के गुरुमुखाँ दी तरहाँ अकाल पुरखु दी सिणति सालाह करनी चाहीदी है, उस अकाल पुरखु नाल आपणी सुरति जोड़नी चाहीदी है, ते सदा

अकाल पुरखु दा नामु जपणा चाहीदा है। जिहड़ा मनुख अकाल पुरखु दा नामु जपदा है, उह मनुख आप सम्सार रूपी समुंदर विचों पार लम्घ जाँदा है, आपणीआँ सारीआँ कुलाँ नूँ पार लम्घा लैदा है, ते अकाल पुरखु दी हज़ूरी विच डिज़्जत नाल जाँदा है।

कलजुग महि कीरतनु परधाना ॥ गुरुमुखि जपीअै लाडि धिआना ॥ आपि तरै सगले कुल तारे हरि दरगह पति सिडु जाडिदा ॥६॥ (१०७५-१०७६)

गुरू अमरदास साहिब सरीर दे बाकी अंगों दे नाल नाल आपणे कंनों नूँ वी इही समझाँदे हन कि, हे मेरे कंनो! अकाल पुरखु दी सिणति सालाह दी बाणी सुणिआ करो, किउंकि सदा थिर रहिण वाले अकाल पुरखु ने तुहानूँ इही सुणन वासते इस संसार विच भेजिआ है। अकाल पुरखु ने कंनों नूँ इसे लड़ी बणाडिआ है ते इस सरीर नाल लाडिआ है ताँ जो असी अकाल पुरखु दी सिणति सालाह दी सूची बाणी नूँ सुण सकीडे। अकाल पुरखु दी सिणति सालाह दी बाणी दे सुणन नाल तन ते मन आनंद भरपूर हो जाँदा है, ते जीभ अकाल पुरखु दे आनंद रूपी नामु विच मसत हो जाँदी है। सदा थिर रहिण वाले अकाल पुरखु ताँ रूप असचरज है, उस दा कोड़ी चक्र चिहन नही दसिआ जा सकदा है, इस लड़ी इह नही किहा जा सकदा कि उह किहो जिहा है, उस दे गुण कहिण सुणन नाल सिरण इही लाभ हुंदा है, कि मनुख उस अकाल पुरखु वरगे गुण आपणे अंदर पैदा करन दी कोशिश करदा है, ते फिर मनुख उस अकाल पुरखु नाल अभेद हो जाँदा है ते उस नूँ आतमक आनंद प्राप्त हुंदा है। गुरू अमरदास साहिब कंनों नूँ इही समझाँदे हन कि, आतमक आनंद देण वाला नामु सुणिआ करो, तुसी पवित्र हो जावोगे, किउंकि अकाल पुरखु ने तुहानूँ इही सुणन वासते भेजिआ है। जिस मनुख दे कंनों नूँ अजे निंदा चुत्रली सुणन दा चसका है, उस दे हिरदे विच आतमक आनंद पैदा नही हो सकदा है। **आतमक आनंद दी प्रापती उसे मनुख नूँ हुंदी है, जिस दे कंन, जीभ, ते होर सारे गिआन इंद्रे अकाल पुरखु दी सिणति सालाह विच मगन रहिंदे हन।**

इं स्रवणहु मेरिहो साचै सुनणै नो पठाइ ॥ साचै सुनणै नो पठाइ सरीरि लाइ सुणहु सति बाणी ॥ जितु सुणी मनु तनु हरिआ होआ रसना रसि समाणी ॥ सचु अलख विडाणी ता की गति कही न जाइ ॥ कहै नानकु अंभ्रित नामु सुणहु पवित्र होवहु साचै सुनणै नो पठाइ ॥३७॥ (६२२)

आपणे आप नूँ अखवाण वाले सेवक जाँ आपणे आप नूँ अखवाण वाले सिख सारे गुरू दे दर ते अकाल पुरखु दी पूजा करन वासते आउंदे हन, ते, अकाल पुरखु दी सिणति सालाह नाल भरपूर श्रेष्ठ गुरुबाणी गाडिन करदे हन। **परंतू अकाल पुरखु उनहाँ मनुखाँ दा बाणी गाडुणा अते सुणना कबूल करदा है, जिनहाँ ने गुरू दे हुकम नूँ बिलकुल सही तरीके नाल जाण लिआ ते उस उते अमल वी कीता है।** इस लड़ी संसार रूपी समुंदर तों पार लंघाण वाले सबद गुरू नूँ ही तीरथ समझो ते उस दी सरन विच पै के अकाल पुरखु दी सिणति सालाह करिआ करो। अकाल पुरखु दे दर ते उनहाँ मनुखाँ दी चंगी सोभा हुंदी है, जिनहाँ मनुखाँ ने अकाल पुरखु दी सिणति सालाह नूँ गुरुबाणी दुआरा जाण लिआ ते उस दे नाल डूंधी साँझ पा लड़ी है।

धनासरी महला ४ ॥ सेवक सिख पूजण सभि आवहि सभि गावहि हरि हरि उतम बानी ॥ गाविआ सुणिआ तिन का हरि थाडि पावै जिन सतिगुर की आगिआ सति सति करि मानी ॥१॥ बोलहु भाडी हरि कीरति हरि भवजल तीरथि ॥ हरि दरि तिन की उतम बात है संतहु हरि कथा जिन जनहु जानी ॥ रहाउ ॥ (६६६)

जिस चीज नूँ पेट हज़म नही कर सकदा, उस दे खाण दा कोड़ी लाभ नही। जिस वीचार नूँ मन समझ नही कर सकदा, उस दा मन ते कोड़ी असर नही हुंदा है। कीरतन विच सबद नूँ सिर्फ राग विच सुणना ही काफी नही, गाडिन कीते जा रहे सबद दी समझ वी बहुत जरूरी है, नही ताँ साडे मन अते सोच ते सबद दा असर किस तरहाँ होवेगा। खाणे दा लाभ ताँ है, जे कर उस दे बणे जूसा दा असर सरीर दे हरेक अंग तक पहुंच जावे, फोकट पदारथ दा कोड़ी लाभ नही, किउंकि उह सरीर विचों बाहर निकल जाँदे हन। क्ची बाणी वी फोकट पदारथ दी तरहाँ है, जिस नाल मन नूँ कोड़ी सेध नही मिलदी है।

इस लड़ी अजेहा उँदम करना है, जिस दे करन नाल मन नूँ विकारों दी मैल न ल्ग सके, ते इह मन अकाल पुरखु दी सिणति सालाह विच टिक के विकारों दे हलिआँ वलों सुचेत रहे ते बिबेक बुधी वाला बण सके।

गुडुड़ी महला ५ ॥ सो किछु करि जितु मैलु न लागै ॥ हरि कीरतन महि डेहु मनु जागै ॥१॥ रहाउ ॥ इको सिमरि न दूजा भाउ ॥ संतसंगि जपि केवल नाउ ॥ १॥ करम धरम नेम ब्रत पूजा ॥ पारब्रहम बिनु जानु न दूजा ॥२॥ ता की पूरन होडी घाल ॥ जा की प्रीति अपुने प्रभ नालि ॥३॥ सो बैसनो है अपर अपारु ॥ कहु नानक जिनि तजे विकार ॥४॥६६॥१६५ ॥ (१६६)

गुरू साहिब रहाउ दी पंगती विच समझा रहे हन, कि, **“सो किछु करि जितु मैलु न लागै”** हे भाडी! उह धारमिक उँदम कर, जिस दे करन नाल, तेरे मन नूँ विकारों दी मैल न ल्ग सके। उह उँदम की है? उह उँदम है, **“हरि कीरतन महि डेहु मनु जागै १॥ रहाउ”**, तेरा इह मन अकाल पुरखु दी सिणति सालाह विच टिक के विकारों दे हलिआँ वलों सुचेत रहे। **“रहाउ”** दा भाव हुंदाँ है, कि इह पंगती इस सबद दा केंदरी भाव है। **“सो किछु करि जितु मैलु न लागै ॥ हरि कीरतन**

महि डेह मनु जागै ॥१॥ रहाउ ॥” जिथे मैल है, गंदगी है, बिमारीआँ वी उथे ही फैलदीआँ हन। डिसे तरहाँ जे कर मन विच मैल है ताँ विकार ही पैदा होणगे। कड़ी जनमाँ दी इस मन नूं मैल लगी होड़ी है, जिस करके इह बहुत ही काला होइआ पिआ है, **“जनम जनम की इसु मन कडु मलु लागी काला होआ सिआह”**। इस लड़ी जे कर मन विच मैल है, ताँ इस नूं साफ करना पवेगा। सफाड़ी दा ताँ बड़ा सौखा ते सपूश्ट तरीका जपुजी साहिब विच अंकित है, **“भरीअै हथु पैरु तनु देह ॥ पाणी धोतै उतरसु खेह ॥ मूत पलीती कपडु होइ ॥ दे साबूणु लड़ीअै एहु धोइ ॥ भरीअै मति पापा कै संगि ॥ एहु धोपै नावै कै रंगि ॥”**

गुरू अरजन साहिब वी इस सबद विच इिही समझा रहे हन। **“इको सिमरि न दूजा भाउ ॥”**, हे भाड़ी! सिरण इिक अकाल पुरखु दा नामु जपु, किसे होर दा पिआर आपणे मन विच ना लिआ। सिमरन दा मतलब इह नहीं कि मूह नाल, **“वाहिगुरू वाहिगुरू”** बोली जाणा है। सिमरन संस्कित दा लफज़ है, याद करना उड़दू दा लफज़ है, ते चेते करना पंजाबी दा लफज़ है, इनहाँ तिनाँ दा अरथ इिक ही है कि हिरदे विच अकाल पुरखु नूं वसाउंणा है। जिस तरहाँ खंड खंड बोलण नाल मूह विच खंड नहीं आ सकदी है। ठीक उसे तरहाँ, **“वाहिगुरू वाहिगुरू”** बोली जाण नाल अकाल पुरखु ने हिरदे विच नहीं वस जाणा है।

<http://www.geocities.ws/sarbjitsingh/BookGuruGranthSahibAndNaam.pdf>

गुरबाणी राहीं दूसे गड़े अकाल पुरखु दे गुण आपणे अंदर पैदा करने हन, ताँ ही अकाल पुरखु दा नामु अंदर वस सकदा है। उस लड़ी आसान तरीका है। **“संतसंगि जपि केवल नाउ”**, साध संगति विच टिक के सिरण अकाल पुरखु दा नामु जपिआ कर, अकाल पुरखु दे गुण गाड़िन करिआ कर, दूसरिआ नाल गुरू दी मूत साँझी करिआ कर। वार वार गुरू दी मूत नूं समझाँगे, वीचारागे, ताँ ही उह मूत साडे जीवन दा हिसा बण सकदी है, ताँ ही, **“गुरू मेरै संगि सदा है नाले”**, हो सकदा है। मिथे होइ धारमिक करम, वरत, पूजा, आदिक बणाइ होइ नेमा दा, कोड़ी लाभ नहीं होणा है, **“करम धरम नेम ब्रत पूजा”**। असी जिआदा तर करम कांड ही करदे हाँ, किउकि उह बहुत आसान हन। माड़िआ दे दिती, रुमाला चड़हा दिता, र्वाइती तौर ते कुझ कु बरतन साफ कर दिते। मूसिआ संगराद दे समे गुरुदुआरा साहिब चले गड़े, प्रसादि लै लिआ, लंगर खा लिआ, अदि। म्था ताँ असी टेकदे हाँ, परंतू असी आपणी हउमै छडण नूं तिआर नहीं हाँ। गुरू दी मूत पसंद नहीं, **“सीसि निवाइअै किआ थीअै जा रिदै कुसुधे जाहि ॥”** (४७०)। इथे ताँ गुरू साहिब समझाँ रहे हन, कि, **“पारब्रहम बिनु जानु न दूजा ॥”**, अकाल पुरखु नूं चित विच वसाउण तों बिना अजेहे किसे दूजे कंम नूं उंचे आतमक जीवन वासते सहाइक ना समझ। **“ता की पूरन होड़ी घाल ॥”**, सिरण उस मनुख दी मिहनत सफल हुंदी है, **“जा की प्रीति अपुने प्रभ नालि ॥”**, जिस दी प्रीति आपणे अकाल पुरखु दे नाल बणी होड़ी है। जिहड़े गुरू नाल प्रेम करदे हन, उनहाँ नाल गुरू उस तो वी कड़ी गुणा जिआदा पिआर करदा है।

करम, धरम, नेम, ब्रत, पूजा, करन वाला मनुख, असल बैसनो नहीं है, उह बैसनो परे तों परे ते स्पेश्ट है, **“सो बैसनो है अपर अपारु ॥”** असल बैसनो उह है, जिस ने साध संगति विच टिक के अकाल पुरखु दी कीरत दुआरा, भाव अकाल पुरखु दे गुण गाड़िन करके, आपणे अंदरों सारे विकार दूर कर लड़े हन, **“सो बैसनो है अपर अपारु ॥ कहू नानक जिनि तजे बिकार॥”**, जीवन वी अजेहे मनुख दा ही सफल हो सकदा है। आपणे अंदरों विकार दूर करने हन, उस लड़ी आपणे मन नूं गुरबाणी दुआरा अकाल पुरखु दे नामु नाल प्रेम पैदा करके साफ करना पवेगा। इस लड़ी गुरबाणी पड़हनी पवेगी, समझणी पवेगी ते जीवन विच अपनाउणी पवेगी। अकाल पुरखु दी कीरत, भाव सिफत सालाह, हिरदे तों करनी पवेगी। ताँ ही मन दी मैल हौली हौली दूर होवेगी, ते मन साफ हो सकेगा। इस लड़ी गुरबाणी दुआरा अकाल पुरखु दे हुकमु ते रजा अनुसार चलणा सिखीड़ीइ ते अरदास विच पदारथ मंगण दी बजाइ, अकाल पुरखु दे नामु दी मंग मंगड़ीइ जिहड़ी पंजवे पातशाह ने समझाड़ी है, **“तेरा कीआ मीठा लागै ॥ हरि नामु पदारथु नानकु माँगै ॥ (३६४)”**।

होर माड़िआ संबंधी पड़हना विअरथ उँदम है, ते होर कूड़ बोलणा वी विअरथ है, किउंकि अजेहे उँदम माड़िआ नाल होर पिआर वधाउंदे हन। गुरू साहिब इिही समझाँदे हन कि, अकाल पुरखु दे नामु तों बिना कोड़ी वी सदा लड़ी नहीं रहिणा है, भाव, सदा नाल नहीं निभणा है, इस वासते जे कर कोड़ी होर पड़हनीआँ ही पड़हदा रहिंदा है ताँ उह जीवन विच जुआर हुंदा है। अकाल पुरखु दी सिणति सालाह करना, उस अकाल पुरखु दा कीरतन करना है, जीव लड़ी इिक बहुत वूड़ी करणी है। अकाल पुरखु दी सिणति सालाह बहुत वूड़ी है, किउंकि उस दा निआँ धरम दे असूलाँ ते आधारित है, भाव उस दे हुकमु ते रजा अनुसार हुंदा है, जिस नूं पछानण लड़ी अकाल पुरखु दी रचना ते उस दे गुणा नूं समझणा बहुत जरूरी है। अकाल पुरखु दी वडिआड़ी करनी सभ तों चंगा कंम है, किउंकि जीव दा असली फल इिहो ही है, भाव, जीवन दा मनोरथ इिही है। अकाल

पुरखु दी सिणति करनी इक व्डी करणी है, किउंकि, अकाल पुरखु चुगल खोराँ दीआँ ग्लाँ वल कंन नही धरदा है। अकाल पुरखु किसो नू पुछ के दान नही देंदा है, इस लड़ी उस अकाल पुरखु दी वडिआड़ी करनी इक उँतम कंम है।

मः ३ ॥ होर कूड पड़णा कूड बोलणा माडिआ नालि पिआरु ॥ नानक विणु नावै को थिरु नही पड़ि पड़ि होडि खुआरु ॥२॥

पउड़ी ॥ हरि की वडिआड़ी वडी है हरि कीरतनु हरि का ॥ हरि की वडिआड़ी वडी है जा निआउ है धरम का ॥ हरि की वडिआड़ी वडी है जा फलु है जीअ का ॥ हरि की वडिआड़ी वडी है जा न सुणई कहिआ चुगल का ॥ हरि की वडिआड़ी वडी है अपुछिआ दानु देवका ॥६॥ (८४)

उपर लिखिआ सबद सपूश्ट सिखिआ देंदा है कि अकाल पुरखु दी सिणति करनी इक बहुत व्डी करणी है, किउंकि, अकाल पुरखु दी सिणति सालाह करना ही अकाल पुरखु दा कीरतन करना है। अकाल पुरखु दी वडिआड़ी करन नाल ही अकाल पुरखु दे हुकमु ते रजा नू समझ सकदे हाँ ते उस अनुसार चल सकदे हाँ। मनुखा जीवन दा मनोरथ वी अकाल पुरखु दी सिणति करनी ही है ताँ जो उस दे गुणा नू समझ सकीडे, पछान सकीडे ते उस अकाल पुरखु दे हुकमु ते रजा अनुसार चल सकीडे।

आपणे मन विच सदा अकाल पुरखु दा नामु रूपी अंम्रित सिंजदे रहो। अकाल पुरखु दा कीरतनु करन लड़ी हर वेले उस अकाल पुरखु दे गुण गाडिन करदे रिहा करो। आपणे मन नू समझाँणा है कि, अकाल पुरखु नाल इहिो जिहा पिआर बणा कि अठे पहिर, भाव, हर वेले अकाल पुरखु नू आपणे नेडे व्सदा समझ सकें। गुरू साहिब समझाँदे हन कि, जिस मनुख दे चंगे भाग जागदे हन, उस दा मन अकाल पुरखु दे चरनाँ विच जुड़ जाँदा है।

बिलावलु महला ५ ॥ मन महि सिंचहु हरि हरि नाम ॥ अनदिनु कीरतनु हरि गुण गाम ॥१॥ असी प्रीति करहु मन मेरे ॥

आठ पहर प्रभ जानहु नेरे ॥१॥ रहाउ ॥ कहु नानक जा के निरमल भाग ॥ हरि चरनी ता का मनु लाग ॥२॥७॥२५॥

(८०७)

मनुख दी कदर उस दे गुणाँ करके हुंटी है। गुरू साहिब वी इक सवाल दी तरहाँ जीव इसतरी नू समझाँदे हन, कि, हे मेरी माँ! मै केहड़े गुणाँ दी बरकति नाल आपणी जिंद दे मालक अकाल पुरखु नू मिल सकदी हाँ? मेरे विच ताँ कोडी गुण नही है, मै आतमक रूप तोँ सूखणी हाँ, अकल हीण हाँ, मेरे अंदर आतमक ताकत वी नही है, फिर मै परदेसण हाँ, अकाल पुरखु दे चरनाँ नू कदे मै आपणा घर नही बणाडिआ, अनेकाँ जूनाँ दे सणर तोँ लंघ के इस मनुखा जनम विच आडी हाँ। हे मेरे प्राना दे पती अकाल पुरखु! मेरे पास तेरा नामु धन नही है, मेरे अंदर आतमक गुणाँ दा जोबन वी नही है, जिस दा मै नू हुलारा आ सके। मै नू अनाथ नू आपणे चरनाँ विच जोड़ लै। आपणे प्रानपती अकाल पुरखु दे दरसन वासते मै तिहाडी फिर रही हाँ, उस नू ल्भदी ल्भदी मै कमली होडी पडी हाँ। गुरू साहिब बेनती करके समझाँदे हन कि, हे दीनाँ उते दडिआ करन वाले! हे किरपा दे घर! हे अकाल पुरखु! तेरी मिहर नाल साध संगति ने मेरी इह विछोडे दी जलन बुझा दिती है। इस लड़ी अकाल पुरखु दे मिलाप लड़ी साध संगति विच बैठ के अकाल पुरखु दे गुण गाडिन करने हन ते आपणा हंकार तिआग के अकाल पुरखु दे गुण सिखणे ते अपनाउंणे हन।

रागु गउड़ी पूरबी महला ५ ॥ १९ सतिगुर प्रसादि ॥ कवन गुन प्रानपति मिलउ मेरी माडी ॥१॥ रहाउ ॥ रूप हीन बुधि बल

हीनी मोहि परदेसनि दूर ते आडी ॥१॥ नाहिन दरबु न जोबन माती मोहि अनाथ की करहु समाडी ॥२॥ खोजत खोजत भडी

बैरागनि प्रभ दरसन कुहु हउ फिरत तिसाडी ॥३॥ दीन दडिआल क्रिपाल प्रभ नानक साधसंगि मेरी जलनि बुझाडी

॥४॥१॥१८॥ (२०४)

आपणे पिआरे सबद गुरू अगे इहिो बेनती करनी है कि, हे पिआरे गुरू! मेरे हिरदे घर विच आ के व्स जा, ते, मेरे कनाँ विच अकाल पुरखु दी सिणति सालाह सुणा। हे पिआरे गुरू! तेरे आडिआँ मेरा मन ते मेरा तन आतमक जीवन नाल खुशहाल हो जाँदा है, तेरे चरनाँ विच रहि के ही अकाल पुरखु दा जस गाडिआ जा सकदा है। गुरू दी मिहर नाल ही अकाल पुरखु हिरदे विच व्स सकदा है, ते माडिआ दा मोह दूर कीता जा सकदा है। अकाल पुरखु दी भगती दी किरपा नाल बुधी विच आतमक जीवन दा चानण हो जाँदा है, ते खोटी मति दे सारे विकार तिआगे जाँदे हन ते दुख दूर हो जाँदे हन। गुरू दा दरसन करदिआँ जीवन पवितर हो जाँदा है, मुड़ मुड़ जूनाँ दे गेड़ विच नही पडीदा। जिहड़ा वडभागी मनुख तेरे मन विच पिआरा ल्गण ल्ग पैदा है, उह, मानो दुनीआ दे सारे ही नौ ज्ञाने अते करामाती ताकताँ हासल कर लैदा है। गुरू तोँ बिना मेरा होर कोडी आसरा नही, इस लड़ी मै नू किसे होर थाँ जाण बारे कुझ नही सुझदा है। मेरे वरगे गुणहीन मनुख दी गुरू तोँ बिना होर कोडी बाँह नही फड़दा, इस लड़ी संत जनाँ दी संगति विच रहि के ही अकाल पुरखु दे चरनाँ विच लीन हो सकदा हाँ। गुरू साहिब समझाँदे हन कि, सबद गुरू ने मै नू अचरज तमाशा विखा दिता है, इस लड़ी मै आपणे मन विच हर वेले अकाल पुरखु दी सिणति सालाह सुण के उस दे मिलाप दा आनंद माणदा रहिंदा हाँ।

मरू महलर ॡ ॥ आउ जी तू आउ हमारै हरि जसु सवन सुनरवना ॥१॥ रहाउ ॥ तुधु आवत मेरर मनु तनु हरिआ हरि जसु तुम संगि गरवना ॥१॥ संत कुरिपर ते हरिदै वरसै दूजर भरउ मिटरवना ॥२॥ भगत दइआ ते बुधि परगरसै दुरमति दूख तजरवना ॥३॥ दरसनु भेटत होत पुनीतर पुनररपि गरभि न पारवना ॥४॥ नउ निधि रिधि सिधि पडी जो तुमरै मनि भरवना ॥ॡ॥ संत बिनर मै थरउ न कोडी अवर न सूझै जरवना ॥६॥ मोहि निरगुन कउ कोडि न ररखै संतर संगि सरवरवना ॥७॥ कहू नरनक गुरि चलतु दिखरइआ मन मधे हरि हरि ररवना ॥८॥२॥ॡ॥ (१०१८)

गहिणे बणरउण लडी पहिलर सोने नू गरम करके नरम कीतर जरँदर है, तरँ जो उरुस नू चंगी तरहरँ ढरलिरआ जर सके। ठीक उरुसे तरहरँ कीरतन मन नू पहिलर मिठी आवरररर जरँ ररग दुआरर कोमल करदर है ते फिर उरुस अंदर सबद वीचरर दुआरर गुण पैदर कर देंदर है। इहर धिआन विच रूखणर है कि, कीरतन अकाल पुरख दी सिपत सरलरर करन वरसते है, नर कि नूचण कुदण वरसते है। फिलमी संगीत अते वूख वूख तरहरँ दीआँ टिउनरँ (तरररर) मन नू तरँ बहूत चंगीआँ लगरदीआँ हन, जिस करके मनुख हौली हौली नूचणरँ अते झूमणरँ वी शूरू कर देंदर है, परंतू अकाल पुरखु तरँ दूर हो जरँदर है। मनुख ने जुड़नरँ तरँ सबद गुरू नरल सी, पर जुड़ जरँदर है, सररर अते संगीत नरल, जिस करके गलत रसते वूल पै जरँदर है, ते मूल नरलरँ टुट जरँदर है। वेखण विच आँउंदर है कि, कडी वररी कडी ररगी सबद दीआँ पंगतीआँ नू अगे पिछे करदे रहिंदे हन, जरँ कडी वररी उरुस विच आरणे कोलो होर कुझ रलर मिलर के गरइन करदे हन। इहो जिही रली भगत मन नू तरँ बहूत चंगी लगरदी है, परंतू गुरू सरहिब दी समझरडी गडी सिखिआ ते सही मररग तरँ दूर लै जरँदी है। गुरबरणी नू नर तरँ तोड़नरँ मोड़नरँ प्रवरन है अते नर ही गुरबरणी विच किसे तरहरँ दी मिली भगत करनी प्रवरन है। फिलमी गीतरँ दी फुरमरइश कीती जरँदी है, परंतू गुरबरणी दे कीरतन दी फुरमरइश नही करनी हुंदी है। जो गुरू दर हुकमु होवे उरुस नू सिर मूथे प्रवरन करनर हुंदर है।

ररसरँ विच चेले सरर वजरउंदे हन, ते उनहरँ चेलिआँ दे गुरू नूचदे हन। नरच नूचण वेले, उह गुरू पैररँ नू हिलरउंदे हन अते आरणर सिर फेरदे हन। उनहरँ दे पैररँ नरल घटर उँड उँड के उनहरँ दे सिर विच पैदर है। ररस वेखण आडे होडे लोक, उनहरँ नू नूचदिआँ वेखदे हन ते हसदे हन। पर उह ररसधररीडे रोजी दी जरतर नूचदे हन ते आरणे आर नू धरती ते मररदे हन। उह गोपीआँ दे सरंग बणर के गरउंदे हन, कनरह दे सरंग बणर के गरउंदे हन, सीतर ररम ते होर ररजिआँ दे सरंग बणर के गरउंदे हन। जिस अकाल पुरखु दर इहर सररर जरगतर बणरइआ होइरआ है, जिहड़र निडर है, अकरर रहित है अते जिस दर नरमु सदर अदूल है, उरुस नू केवल उही सेवक सिमरदे हन, जिनहरँ दे अंदर अकाल पुरखु दी मिहर नरल चइहदी कलर है, जिनहरँ दे मन विच सिमरन करन दर उतरशरह है, उनहरँ सेवकरँ दी ज़िंदगी रूपी ररत सुआदली गुजरदी है। इहर सिखिआ जिनहरँ ने गुरू दी मूत दुआरर सिख लडी है, मिहर दी नजर वरलर अकाल पुरखु आरणी बज्शश दुआरर उनहरँ नू संसर रूपी समुंदर तरँ पार लंघर देंदर है। नूचण, घुमण अते फेररीआँ लैण नरल मनुखर जीवन दर उधरर नही हो सकदर, किउंकि बेअंत पदररथ ते जीव जंतू सदर भौंदे रहिंदे हन, जिस तरहरँ कि, कोहलू, चरखर, चकी, चूक, थलरँ दे बेअंत वररोले, लरटू, मधरणीआँ, फलहे, पंछी, भंभीरीआँ जो इक सरहे उडदीआँ रहिंदीआँ हन, इहर सभ भौंदे रहिंदे हन। मूल उँते चरइह के कडी जीव जंतू भवरडे जरँदे हन। इसर तरहरँ भौण वरले जीवरँ दर अंत नही पारइरआ जर सकदर। इसे तरहरँ उह अकाल पुरखु जीवरँ नू मरइरआ दे बंधनरँ ते जंजीररँ विच जरकड़ के भवरउंदर रहिंदर है, हरेक जीव आरणे कीते करमरँ दे संसकररँ अनुसरर नूच रिहर है। जिहड़े जीव नूच नूच के हसदे हन, उह अंत नू रो के डेथरँ तुर जरँदे हन। उंअ वी नूचण दूण नरल किसे उंची अवसरथर ते नही अूपइरआ जर सकदर, ते नर ही उह सिध बण जरँदे हन। नूचणर कुदणर तरँ केवल मन दर इक शौक है। गुरू सरहिब समझरँदे हन, कि, अकाल पुरखु दर प्रेम केवल उनहरँ दे मन विच ही है, जिनहरँ दे मन विच अकाल पुरखु दर डर है।

मः १ ॥ वरइनि चेले नूचनि गुर ॥ पैर हलरइनि फेरनि सिर ॥ उडि उडि ररवर झरटै पारइ ॥ वेखै लोकु हसै धरि जरइ ॥ रीटीआ कररणि पूरहि तरल ॥ आरु पछरइहि धरती नरलि ॥ गरवनि गोपीआ गरवनि कानू ॥ गरवनि सीतर ररजे ररम ॥ निरभउ निरंकरू सचु नरमु ॥ जर कर कीआ सरगल जरहानु ॥ सेवक सेवहि करमि चड़रउ ॥ भिनी रैणि जिनर मनि चरउ ॥ सिखी सिखिआ गुर वीचररि ॥ नदरी करमि लघरडे पारि ॥ कोलू चरखर चकी चकु ॥ थल वररोले बहूत अनमुतु ॥ लरटू मधरणीआ अनगरह ॥ पंखी भउदीआ लैनि न सरह ॥ सूअै चरइ भवरडीअहि जंत ॥ नरनक भउदिआ गरणत न अंत ॥ बंधन बंधि भवरडे सोइ ॥ पडिअै किरति नूचै सभु कोइ ॥ नूचि नूचि हसरहि चलहि से रीइ ॥ उडि न जरही सिध न होहि ॥ नूचणु कुदण मन कर चरउ ॥ नरनक जिनू मनि भउ तिनर मनि भरउ ॥२॥ (४६ॡ)

जे कर संगीत विच मसत हो के कीरतन सुणो तरँ झूमणरँ शूरू हो जरँदर है अते अूखरँ मीटीआँ जरँदीआँ हन। जे कर गुरबरणी विच लीन हो के कीरतन सुणो तरँ मन सुचेत रहिंदर है अते गुरू सरहिब किहड़ी सिखिआ देंदे हन, उरुस विच धिआन रहिंदर है। जे कर गुरबरणी अते उरुस दे अरथ भरव विच लीन हो के कीरतन सुणो तरँ अूखरँ खुलीआँ रहिंदीआँ हन ते गुरबरणी विच धिआन रहिंदर है।

जे कर कीरतन समें राग ही गाड़िआ है जाँ राग ही सुणिआ है, ताँ मन नूँ लाभ इस तरहाँ है, जिस तरहाँ कि, पाणी पी के चूली कर दिती जाँदी है। भाँवे मूँह नूँ कुझ कु पाणी लूँगिआ रहि सकदा है, परंतू उस नाल पिआस नहीं बुझदी। इस दे उलट जे कर कीरतन विच गुरू दे सबद नूँ आपणे हिरदे विच वसा के, धिआन लगा के, अते सबद वीचार नाल गाड़िआ जावे, ताँ लाभ इस तरहाँ है जिस तरहाँ कि पाणी दा पूरा गलास पी लिआ है।

गुरू गरंथ साहिब विच सारे सबदाँ दे सिरलेख विच इह खास तौर ते लिखिआ गिआ है कि सबद नूँ किस राग विच ते किस तरहाँ गाड़िन करना है। इह हदाइत इस लड़ी लिखी गड़ी है, ताँ जो सबद गाड़िन करन समें उस सबद दा अरथ भाव सही तरीके नाल समझ आ सके, सबद विच धिआन लूँगा रहे ते सबद दी ठीक वीचार लड़ी सेध मिलदी रहे। कड़ी रागीआँ ने लोकाँ नूँ प्रभावत करन लड़ी फिलमी टिउनाँ वरतणीआँ शुरू कर दितीआँ हन, इस नाल उह पैसे ताँ जिआदा इक्ठे कर सकदे हन, परंतू लोकाँ नूँ सही मारग तौँ दूर लिजा रहे हन। मन दा सुधार राग जाँ टिउन ने नहीं करना है, बलकि सबद दी ठीक वीचार ते मन नूँ मिली सेध ने करना है।

गुरू साहिब समझाँदे हन कि, जिस तरहाँ सतिगुरू ने मैनुँ उपदेश दिता है, मैँ उसे तरहाँ उँची बोल के आपणे मन नूँ समझा दिता है, कि अकाल पुरखु दे कीरतन दी बरकति नाल ही विकाराँ तौँ बचाउ हो सकदा है। **इस लड़ी कीरतन गुरू दे उपदेश, भाव गुरबाणी अनुसार ही करना है, ताँ ही मनुख दा उधार हो सकदा है।**

जैसो गुरि उपदेसिआ मैँ तैसो कहिआ पुकारि ॥ नानकु कहै सुनि रे मना करि कीरतनु होइ उधारु ॥४॥१॥१५८॥ (२१४)

आम तौर ते संसारी जीव हंकारी होइ रहिंदे हन, कोड़ी वडभागी मनुख ही गुरू दे सबद विच जुड़ के विकाराँ दी मैल आपणे मन तौँ उतारदा है। गुरू साहिब समझाँदे हन कि, मैँ उस अकाल पुरखु दे गुणाँ दा अंत नहीं पा सकदा हाँ, उस अकाल पुरखु दी मिहर नाल ही मैँ उस दे गुण गाड़िन करदा हाँ, ते गुरू दे सबद दुआरा ही उस अकाल पुरखु दे गुणाँ दी वीचार करदा हाँ। अकाल पुरखु दी किरपा नाल ही मैँ उस दा नामु जपदा हाँ, उस दी सिणति सालाह करदा हाँ, अते आपणे अंदरों हउमै दूर करदा हाँ। **इस लड़ी गुरू दे सबद दुआरा ही अकाल पुरखु दे गुण गाड़िन करने हन, उस दी सिणति सालाह करनी है ते गुरू दे सबद दी वीचार दुआरा ही उस अकाल पुरखु दे गुण समझ के आपणे अंदरों हउमै दूर करना है।**

तिस किआ गुणा का अंतु न पाड़िआ हउ गावा सबदि वीचारी ॥६॥ हरि जीउ जपी हरि जीउ सालाही विचह आपु निवारी ॥१०॥ (६११)

जिहड़ा मनुख गुरू दे सबद नूँ आपणे हिरदे विच वसाँदा है, उह सबद वीचार दी बरकत नाल विकाराँ तौँ बच जाँदा है ते उस दा सरीर सोने वरगा सुध हो जाँदा है। जिस अकाल पुरखु दे गुणाँ दा अंत नहीं पाड़िआ जा सकदा, जिस अकाल पुरखु दी हसती दा उरला ते परला बना नहीं लूँभिआ जा सकदा, उह अकाल पुरखु उस मनुख दे हिरदे विच आ वसदा है। इस लड़ी सदा थिर रहिण वाले अकाल पुरखु दी सिणति सालाह दी बाणी दुआरा अकाल पुरखु दी सेवा भगती करदे रिहा करो। अकाल पुरखु गुरू दे सबद विच जोड़ के मनुख नूँ आपणे नाल मिला लैदा है। जिहड़े मनुख अकाल पुरखु दा सिमरन करदे हन, मैँ उनहाँ तौँ कुरबान जाँदा हाँ, गुरू दे सबद दी बरकत नाल मैँ उनहाँ दी संगति विच मिलदा रहिंदे हाँ। जिहड़े मनुख साध संगति विच बैठ के अकाल पुरखु दे गुण गाड़िन करदे हन, मैँ उनहाँ दे चरनाँ दी धूड़ आपणे मूँह उते, आपणे मूँह उते लाँदा हाँ, भाव मैँ अजेहे गुरमुखाँ दी संगति विच बैठ के गुरू दे सबद दी वीचार दुआरा जीवन दा सही मारग नूँ समझ के उस अनुसार चलदा हाँ। मैँ अकाल पुरखु दे गुण ताँ ही गा सकदा हाँ, जे कर मैँ उस अकाल पुरखु नूँ चंगा लूँगाँ, जे कर मेरे उते उस अकाल पुरखु दी मिहर होवे। जे कर मेरे हिरदे विच अकाल पुरखु दा नामु वस जाड़े, ताँ गुरू दे सबद दी बरकत नाल मेरा जीवन सोहणा बण जाँदा है। जिहड़ा मनुख गुरू दी बाणी विच जुड़दा है, उह सारे संसार विच परगट हो जाँदा है, नामु विच लीन रिहाँ मनुख सदा काड़िम रहिण वाले अकाल पुरखु विच समाड़िआ रहिंदे है। जिहड़ा मनुख आपणे हिरदे नूँ गुरू दे सबद दी सहाइता नाल पड़तालदा रहिंदे है, उह मनुख विकाराँ वलों अडोल जीवन वाला बण जाँदा है। गुरू दे सबद विच जुड़िआँ अकाल पुरखु उस मनुख नूँ मिहर दी निगाह नाल वेखदा है। जिहड़ा मनुख गुरू दे सबद दुआरा आतमक जीवन दी सूझ लड़ी गिआन दा सुरमा वरतदा है, मिहर दा मालक अकाल पुरखु उस नूँ आपणी मिहर नाल आपणे चरनाँ विच मिला लैदा है। **इस लड़ी गुरू दे सबद ते उस दी वीचार दुआरा साध संगति विच बैठ के अकाल पुरखु दे गुण गाड़िन करने हन ते समझणे हन, ताँ जो साडा मनुखा सरीर सबद वीचार दी बरकत नाल विकाराँ तौँ बच जावे ते सोने वरगा सुध हो सके, जीवन दा सही मारग समझ सकड़ीइ ते उस अनुसार चल सकड़ीइ।**

मारू महला ३ ॥ काड़िआ कंचनु सबदु वीचारा ॥ तिथै हरि वसै जिस दा अंतु न पारावारा ॥ अनदिनु हरि सेविहु सची बाणी हरि जीउ सबदि मिलाइदा ॥१॥ हरि चेतहि तिन बलिहारे जाउ ॥ गुर कै सबदि तिन मेलि मिलाउ ॥ तिन की धूरि लाड़ी मुखि मसतकि सतसंगति बहि गुण गाड़िदा ॥२॥ हरि के गुण गावा जे हरि प्रभ भावा ॥ अंतरि हरि नामु सबदि सुहावा ॥

**गुरबाणी चहु कुंडी सुणीअै साचै नामि समाडिदा ॥३॥ सो जनु साचा जि अंतुर भाले ॥ गुर कै सबदि हरि नदरि निहाले ॥
गिआन अंजनु पाइ गुर सबदी नदरी नदरि मिलाडिदा ॥४॥ (१०६५)**

जिस तरहँ राजा राज दे कंमाँ विच मगन रहिंदा है, लालची मनुख लालच वधाण वाले आहराँ विच फसिआ रहिंदा है, नशिआँ दा प्रेमी मनुख नशिआँ नाल चंबड़िआ रहिंदा है, बचा दुध नाल परचिआ रहिंदा है, विदवान मनुख विदिआ पड़हन पड़ाण विच जूश रहिंदा है, उसे तरहँ आतमक जीवन दी सूझ वाला मनुख अकाल पुरखु दे प्रेम रंग विच मसत रहिंदा है। जिस तरहँ अखाँ पदारथ वेख वेख के सुख माणदीआँ हन, जीभ सुआदले पदारथाँ दे सुआद चखण विच जूश रहिंदा है, उसे तरहँ अकाल पुरखु दे भगत अकाल पुरखु दी सिणति सालाह दे गीत गाड़िन करदे रहिंदे हन। **अकाल पुरखु दे भगत नूँ इही कार चंगी लुगदी है, कि उह अकाल पुरखु दे प्रेम रंग विच मसत रहिंदा है, अकाल पुरखु नूँ अंग-संग वेख के, ते सबद वीचार दुआरा गुर दी सेवा करके अकाल पुरखु दी सिणति सालाह विच ही प्रसंन रहिंदा है।**

हरि जन कउ इही सुहावै ॥ पेखि निकटि करि सेवा सतिगुर हरि कीरतनि ही त्रिपतावै ॥ रहाउ ॥ (६१३)

<http://www.geocities.ws/sarbjitsingh/Bani2250GurMag20160819.pdf>,

<http://www.sikhmag.com/2016/0821-gur-ki-seva.html>,

जिस मनुख नूँ गुर दी किरपा नाल आपणे आप बारे सोझी आ जाँदी है, ताँ इह जाण लवो कि उस दी त्रिश्ना मिट जाँदी है। जिहड़ा मनुख साधसंगत विच अकाल पुरख दी सिणति सालाह करदा है, उह सारे रोगाँ तों बच जाँदा है। जिहड़ा मनुख हर रोज अकाल पुरखु दा सिरफ कीरतन ही उँचारदा रहिंदा है, उह मनुख ग्रिहसत विच रहिंदा होइआ वी वासना तों रहित ते निरलेप रहिंदा है। जिस मनुख दी आस इक अकाल पुरख उँते है, उस दी जमाँ वाली फाही कूटी जाँदी है। जिस मनुख दे मन विच अकाल पुरखु दे मिलण दी ताँघ है, उस मनुख नूँ फिर कोड़ी दुख पोंह नहीं सकदा।

गुर प्रसादि आपन आपु सुझै ॥ तिस की जानहु तिसना बुझै ॥ साधसंगि हरि हरि जसु कहत ॥ सरब रोग ते एहु हरि जनु रहत ॥ अनदिनु कीरतनु केवल बखानु ॥ ग्रिहसत महि सोझी निरबानु ॥ इके उपरि जिसु जन की आसा ॥ तिस की कटीअै जम की फासा ॥ पारब्रहम की जिसु मनि भूख ॥ नानक तिसहि न लागहि दूख ॥४॥ (२८१)

सबद गुर (साध) दे पैर धो धो के अकाल पुरख दा नामु रूपी अंमिंत जल पीए, गुर तों आपणी जिंद वार के इह मनुखा जीवन बतीत करो। सबद गुर दे पैराँ दी जक विच इशानान करके, भाव गुरबाणी अनुसार जीवन विच विचर के, गुर तों सदके जावो। गुर दी सेवा वडे भागाँ नाल मिलदी है, गुर दी संगति विच ही अकाल पुरखु दी सिणति सालाह कीती जा सकदी है। सबद गुर अनेकाँ औकड़ाँ तों जो कि आतमक जीवन दे राह विच आउंदीआँ हन, उनहाँ तों बचा लैदा है, गुरमुख अकाल पुरखु दे गुण गाड़िन करके नामु रूपी अंमिंत दा सुआद माणदा रहिंदा है। जिस मनुख ने गुर दा आसरा फड़ लिआ, ते जिहड़ा मनुख गुर दे दर ते आ गिआ, मानो उस ने जीवन दे सारे सुख पा लडे हन। **इस लड़ी गुर दी संगत विच ही अकाल पुरखु दा कीरतनु गाड़िन करना है, ते अकाल पुरखु दे गुण गा के अकाल पुरख दे नामु रूपी अंमिंत दा सुआद मानणा है।**

चरन साध के धोडि धोडि पीउ ॥ अरपि साध कउ अपना जीउ ॥ साध की धरि करहु इसनानु ॥ साध उपरि जाईअै कुरबानु ॥ साध सेवा वडभागी पाईअै ॥ साधसंगि हरि कीरतनु गाईअै ॥ अनिक बिघन ते साधू राखै ॥ हरि गुन गाइ अंमिंत रसु चाखै ॥ एट गही संतह दरि आइआ ॥ सरब सूख नानक तिह पाइआ ॥६॥ (२८३)

शास्र ते वेद पुनाँ ते पापाँ दी वीचार ही दूसदे हन, इह दूसदे हन कि फलाणे कंम पाप हन, फलाणे कंम पुन हन, जिनहाँ दे करन नाल मुड़ मुड़ कदे नरक विच ते कदे सुरग विच पै जाडीदा है। ग्रिहसत विच रहिण वालिआँ नूँ परिवारक चिंता तंग करदी रहिंदी है, ग्रिहसत दा तिआग करन वाले आपणे हंकार नाल आफरे रहिंदे हन, ते निरे करम कांड करन वालिआँ दी जिंद माइआ दे जंजाल विच फसी रहिंदी है। जे कर किसे तीरथ उते जाए, ताँ उथे इही वेखिआ जाँदा है, कि लोक आपणे आप बारे हंकार विच इही कहिंदे रहिंदे हन, कि “मै धरमी हाँ, मै धरमी हाँ”, ते पंडित वी माइआ दे रंग विच रंगे होइे रहिंदे हन। फिर सवाल पैदा हुंदा है कि उह असथान किहड़ा है ते किये है, जिये हर वेले अकाल पुरखु दी सिणति सालाह हुंदी होवे। **गुर साहिब इस दा उँतर दे के समझादे हन कि, साध संगति विच रहि के सदा अकाल पुरखु दी सिणति सालाह करदे रहिणा चाहीदा है, किउंकि इस दी बरकति नाल मन दे भरम, परिवारक मोह ते चिंता, हउमै, माइआ दे जंजाल, आदिक, कोड़ी वी पोह नहीं सकदे, परंतू इह असथान गुर पासों ही पाइआ जा सकदा है।**

साधसंगि हरि कीरतनु गाईअै ॥ इह असथानु गुर ते पाईअै ॥१॥ रहाउ दूजा ॥७॥५८॥ (३८५)

<http://www.geocities.ws/sarbjitsingh/Bani2010GurMag200703.pdf>

<http://www.sikhmag.com/2007/0325-sadh-sangat.html>

सतिगुरु दी किरपा नाल जिस हिरदे विच अकाल पुरखु आ व्सदा है, उस हिरदे विच बड़ी उंची मति परगट हो जाँदी है। उह अकाल पुरखु सभ जीवाँ विच विआपक है, परंतू सतिगुरु दी किरपा नाल ही उह मनुख दे हिरदे विच परगट हुंदा है। अकाल पुरखु सभ जीवाँ दी पालणा करदा है, सभनाँ नूं रिज़क देंदा है, सभनाँ नूं रिज़क अपड़ाँदा है। पूरे सतिगुरु ने आप समझ के जगत नूं समझाड़िआ है, कि अकाल पुरखु ने आपणे हुकम विच ही सारा जगत पैदा कीता है। जिहड़ा मनुख अकाल पुरखु दे हुकम नूं मिठा करके मंनदा है, उही मनुख आतमक आनंद माणदा है। अकाल पुरखु दा हुकमु साहाँ पातिसाहाँ दे सिर उते वी चल रिहा है, ते कोड़ी उस तों आकी नहीं हो सकदा। सतिगुरु अभुल है, ठीक सिखिआ देण वाला है, सही मारग दरशन करन वाला है, ते उस दा उपदेश वी बहुत डूँघा है। सतिगुरु दे सबद दुआरा ही संसार रूपी समुंदर तों पार लंघिआ जा सकदा है। सतिगुरु इही समझाँदा है कि अकाल पुरखु आप ही जीवाँ नूं पैदा करके, आप ही उनहाँ दी संभाल करदा है, सभनाँ नूं साह जिंद वी अकाल पुरखु आप ही देंदा है, ते रोज़ी वी आप ही देंदा है। **अकाल पुरखु दे हुकमु नूं पूरे सतिगुरु दुआरा ही समझिआ जा सकदा है, इस लड़ी कीरतनु वी सतिगुरु दे सबद दा ही हो सकदा है, सूची बाणी दा ही हो सकदा है।**

पूरे सतिगुरु बूझि बुझाड़िआ ॥ हुकमे ही सभु जगतु उपाड़िआ ॥ हुकमु मंने सोड़ी सुखु पाड़े हुकमु सिरि साहा पातिसाहा हे ॥३॥ सचा सतिगुरु सबदु अपारा ॥ तिस दै सबदि निसतरै संसारा ॥ आपे करता करि करि वेखै देदा सास गिराहा हे ॥४॥
(१०५५-१०५६)

जिस मनुख दे हिरदे विच पूरा सतिगुरु सदा थिर रहिण वाले अकाल पुरखु दा नामु प्का करदा है, उह मनुख गुरू दे सबद दुआरा सदा थिर रहिण वाले अकाल पुरखु दे गुण गाड़िन करदा रहिंदा है, उस मनुख नूं डिउं दिसदा है, कि गुणाँ दा दाता अकाल पुरखु सभ जीवाँ विच व्स रिहा है, अते हरेक दे सिर उँते उह जीवन दा अंतम समाँ (साहा) लिखदा है, जिस समें जीव इसतरी ने आपणे सहुरे घर, भाव परलोक लड़ी तुर जाणा है। गुरू दे सनमुख रहिण वाले मनुख नूं अकाल पुरखु आपणे अंग संग व्सदा दिसदा है। जिहड़ा मनुख गुरू दे सबद दुआरा सेवा भगती करदा है, उह मनुख माड़िआ दी त्रिशना व्लों र्जिआ रहिंदा है। जिहड़े मनुख सिणति सालाह वाली सूची बाणी दुआरा हर वेले अकाल पुरखु दी सेवा भगती करदे रहिंदे हन, गुरू दे सबद दी बरकति नाल उनहाँ दे अंदर आतमक आनंद बणिआ रहिंदा है। **इस लड़ी सेवा भगती पूरे गुरू दे सबद दुआरा, सूची बाणी अनुसार अकाल पुरखु गुण गाड़िन करन नाल ही हो सकदी है।**

सतिगुरु पूरा साचु दिड़ाइ ॥ सचै सबदि सदा गुण गाड़े ॥ गुणदाता वरतै सभ अंतरि सिरि सिरि लिखदा साहा हे ॥७॥ सदा हदूरि गुरुमुखि जापै ॥ सबदे सेवै सो जनु धापै ॥ अनदिनु सेवहि सची बाणी सबदि सचै एमाहा हे ॥८॥ (१०५५-१०५६)

पूरा गुरू जिस मनुख दे हिरदे विच अकाल पुरखु दी भगती करन लड़ी विश्वास पैदा करदा है, उह मनुख गुरू दे सबद दुआरा अकाल पुरखु दे नामु विच आपणा चित जोड़ लैदा है, उस दे मन विच, तन विच ते हिरदे विच सदा अकाल पुरखु व्सिआ रहिंदा है। **उही भगत अडोल आतमक जीवन वाले बणदे हन, जिहड़े अकाल पुरखु दे मन विच पिआरे ल्गदे हन। उह अकाल पुरखु दे दर ते टिक के सूची बाणी दुआरा अकाल पुरखु दी सिणति सालाह करदे रहिंदे हन, गुरू दे सबद दी बरकति नाल उनहाँ दा आतमक जीवन सोहणा बण जाँदा है। उह भगत जन सदा थिर रहिण वाले अकाल पुरखु दी सिणति सालाह दी सूची बाणी हर वेले गाड़िन करदे रहिंदे हन। धन तों सखणे निरधन मनुखाँ लड़ी अकाल पुरखु दा नामु ही डिक एट असरा ते सरमाड़िआ है। इस लड़ी अकाल पुरखु दे कीरतन विच सिर्फ गुरू दे सबद दी सूची बाणी ही परवान है।**

से भगत सचे तेरै मनि भाड़े ॥ दरि कीरतनु करहि गुर सबदि सुहाड़े ॥ साची बाणी अनदिनु गावहि निरधन का नामु वेसाहा हे ॥१२॥ (१०५५-१०५६)

अकाल पुरखु आप ही जिनहाँ मनुखाँ नूं आपणे चरनाँ विच जोड़दा है, ते फिर उनहाँ मनुखाँ नूं विछोड़दा नहीं है। उह मनुख गुरू दे सबद दुआरा सदा अकाल पुरखु दी सिणति सालाह करदे रहिंदे हन। हे अकाल पुरखु! सभ जीवाँ दे सिर उँते तूम सिर्फ डिक आप ही मालक है, तेरी मिहर नाल ही जीव गुरू दे सबद विच जुड़ के तेरा नामु जप सकदे हन, ते तेरी सिणति सालाह कर सकदे हन। गुरू दे सबद तों बिना कोड़ी मनुख तेरे नाल साँझ नहीं पा सकदा है, गुरू दे सबद दुआरा तूम आप ही आपणे अक्थ स्रूप दा बिआन करदा है। हे अकाल पुरखु! तूम आप ही सबदु है ते आप ही सबद गुरू रूप हो के सदा सबद दी दाति देंदा आड़िआ है, सबद गुरू रूप हो के तूम आप ही अकाल पुरखु दा नामु जप के जीवाँ नूं वी इह दाति पहंचाँदा आ रिहा है। **इह सबद ही है, जिस दुआरा अकाल पुरखु नाल संबंध बणाड़िआ जाँ सकदा है, गुरू दे सबद दुआरा सदा अकाल पुरखु दी सिणति सालाह कीती जा सकदी है, गुरू दे सबद तों बिना कोड़ी मनुख अकाल पुरखु नाल साँझ नहीं पा सकदा है, इस लड़ी कीरतनु वी गुरू दे सबद दा ही हो सकदा है, किसे होर क्ची बाणी दा नहीं हो सकदा है।**

जिन आपे मेलि विछोड़हि नाही ॥ गुर कै सबदि सदा सालाही ॥ सभना सिरि तू इको साहिबु सबदे नामु सलाहा हे ॥१३॥
बिनु सबदै तुधुनो कोड़ी न जाणी ॥ तुधु आपे कथी अकथ कहाणी ॥ आपे सबदु सदा गुर दाता हरि नामु जपि संबाहा हे
॥१४॥ (१०५५-१०५६)

जिनहाँ मनुखाँ दे मन विच ते हिरदे विच सदा अकाल पुरखु दे नामु सिमरन दा ही आहर है, जिहड़े मनुख अकाल पुरखु दे प्रेम अते अकाल पुरखु दी भगती दे मतवाले हन, जिहड़े मनुख अकाल पुरखु दे गुण गाड़िन करन विच रुझे रहिंदे हन, उनहाँ मनुखाँ नूं इह संसार दा मोह पोह नहीं सकदा है। इस लड़ी कंनाँ नाल मालक अकाल पुरखु दी सिणति सालाह सुणनी, जीभ नाल मालक अकाल पुरखु दा नामु चेत करना, इह संत जनाँ दी इह नित दी कार होड़िआ करदी है। उनहाँ संत जनाँ दे हिरदे विच अकाल पुरखु दे सोहणे चरनाँ दा सदा टिकाउ बणिआ रहिंदा है, अकाल पुरखु दी पूजा भगती उनहाँ दे प्राणाँ दा आसरा हुंदा है।

सारग महला ५ ॥ मनि तनि राम को बिउहारु ॥ प्रेम भगति गुन गावन गीथे पोहत नह संसारु ॥१॥ रहाउ ॥ स्रवणी कीरतनु
सिमरनु सुआमी इहु साध को आचारु ॥ चरन कमल असथिति रिद अंतरि पूजा प्रान को आधारु ॥१॥ (१२२२)

हे जीव इसतरीड़े! जिस सतिसंग घर विच अकाल पुरखु दी सिणति सालाह कीती जाँदी है, अते इस सारी सिशटी दे करते दे गुणाँ दी वीचार हुंदा है, उस सतिसंग घर विच जा के तूं वी अकाल पुरखु दी सिणति सालाह दे गीत, अकाल पुरखु दे मिलाप (सुहाग) दी ताँघ दे सबद गाड़िआ कर ते आपणे पैदा करन वाले अकाल पुरखु नूं याद करिआ कर। तूं सतसंगीआँ नाल मिल के पिआरे निरभउ खसम अकाल पुरखु दी सिणति सालाह दे गीत गा अते आख कि मै सदके जाँदी हाँ, उस सिणति सालाह दे गीत तों जिस दी बरकति नाल सदा दा सुख मिलदा है। हे मेरी जिंदे! जिस खसम दी हजूरी विच सदा जीवाँ दी संभाल हो रही है, जो दाताँ देण वाला मालक हरेक जीव दी संभाल करदा है, जिस दातार दीआँ दाताँ दा मुल तेरे पासों नहीं पै सकदा है, तूं उस दातार बारे की अंदाज़ा ला सकदी है? किउंकि उह दातार अकाल पुरखु बहुत बेअंत है। इस लड़ी सतिसंग विच जा के अरज़ोड़ीआँ करिआ कर, किउंकि उह संमत, उह दिहाड़ा पहिलाँ ही मिथिआ होड़िआ है, जदों अकाल पुरखु पती दे देस जाण लड़ी जीव इसतरी वासते साहे चिठी आउणी है। इही अरज़ोड़ी करनी है, कि हे सतिसंगी सहेलीए! रल मिल के मै नूं माँड़ीइँ पाए, ते मै नूं सोहणीआँ असीसाँ वी दिए, भाव, मेरे लड़ी अरदास वी करो कि अकाल पुरखु पती नाल मेरा मिलाप हो जाड़े। परलोक विच जाण लड़ी मौत दी इह साहे चिठी हरेक घर विच आ रही है, हरेक जीव लड़ी आँउंदी है, ते अजेहे सदे नित पै रहे हन। गुर साहिब समझाँदे हन कि, उस सदा भेजण वाले अकाल पुरखु पती नूं याद रूखणा चाहीदा है, किउंकि साडे लड़ी वी उह दिन नेड़े आ रहे हन। इस लड़ी अकाल पुरखु दे गुण ते उस अकाल पुरखु दे गुणाँ दी वीचार आपणे हिरदे विच लै के आउणी ही कीरतन है।

सोहिला रागु गुडुड़ी दीपकी महला १ ॥ १६ सतिगुर प्रसादि ॥ जै घरि कीरति आखीअै करते का होड़ि बीचारो ॥ तितु घरि
गावहु सोहिला सिरिहु सिरजणहारो ॥१॥ तुम गावहु मेरे निरभउ का सोहिला ॥ हउ वारी जितु सोहिलै सदा सुखु होड़ि
॥१॥ रहाउ ॥ नित नित जीअड़े समालीअनि देखैगा देवणहारु ॥ तेरे दानै कीमति ना पवै तिसु दाते कवणु सुमारु ॥२॥
संबति साहा लिखिआ मिलि करि पावहु तेलु ॥ देहु सजण असीसड़ीआ जिउ होवै साहिब सिउ मेलु ॥३॥ घरि घरि इहो
पाहूचा सदड़े नित पवनि ॥ सदनहारा सिमरीअै नानक से दिह आवनि ॥४॥१॥ (१२)

उँपर लिखे सबद विच स्पष्ट करके समझाड़िआ गिआ है कि अकाल पुरखु दी सिणति सालाह दे गीत गाड़िन करने हन, ते उस करतार दे गुणाँ दी वीचार करनी है, (सोहिला = कीरति + बीचारो = कीरतन), कीरतन उथे ही है, जिथे “करते का होड़ि बीचारो” हुंदा है, इस लड़ी अकाल पुरखु दे गुण आपणे हिरदे विच लै के आउणे ही कीरतन है। कीरतन ताँ ही सफल है, जे कर हिरदे विच करते दी वीचार वी है।

अकाल पुरखु दे घर विच हरेक पदारथ मौजूद है, आतमक जीवन देण वाले नामु रूपी अंम्रित नाल उस अकाल पुरखु दे ज्ञाने भरे पड़े हन। अकाल पुरखु बड़ीआँ ताकताँ दा मालक है, उस दा नामु चेत करन नाल कोड़ी दुख पोह नहीं सकदा, उस दा नामु संसार रूपी समुंदर तों पार लंघा देंदा है। जगत दे शूर तों ही उह अकाल पुरखु आपणे भगताँ दा राखा चलिआ आ रिहा है। उस अकाल पुरखु दी सिणति सालाह कर कर के मै आतमक जीवन हासल कर रिहा हाँ। अकाल पुरखु दा नामु मिठा है, सभ रसाँ नालों व्डा रस है, मै ताँ हर वेले अकाल पुरखु दा नामु रस आपणे मन दुआरा, गिआन इँदिआँ दुआरा, अकाल पुरखु दी सिणति सालाह कर कर के पीदा रहिंदा हाँ।

आदि जुगादि भगतन का राखा उसतति करि करि जीवा ॥ नानक नामु महा रसु मीठा अनदिनु मनि तनि पीवा ॥१॥

(७७८)

कड़ी मनुख देवतिआँ दी पूजा विच, देवतिआँ नूं नमसकार डंडउत करन विच, छे करमाँ दे करन विच, चौरासी आसण करन विच, मसत रहिंदे हन, परंतू उह वी इनिहाँ मिथे होड़े धारमिक करमाँ दे करन कर के आपणे आप नूं धरमी समझ के हंकार करदे रहिंदे हन ते माडिआ दे मोह दे बंधनाँ विच जकड़े रहिंदे हन। इनिहाँ तरीकिआँ नाल अकाल पुरखु नूं नहीं मिलिआ जा सकदा। कड़ी मनुख राज हकूमत दा हंकार ते रंग तमाशे माणदे रहिंदे हन, सुंदर डिसतीआँ दी सेज माणदे रहिंदे हन, आपणे सरीर उते चंदन ते अतर वरतदे रहिंदे हन। परंतू इह सभ कुझ ताँ मनुख नूं विकाराँ ते भिआनक नरक वल लै जाण वाले हन। इस लड़ी साध संगति विच बैठ के अकाल पुरखु दी सिणति सालाह करनी, इह कंम होर सारे करमाँ नालों श्रेष्ठ है। परंतू, इह अवसर उस मनुख नूं ही मिलदा है, जिस दे म्थे उते पूरबले कीते करमाँ दे संसकाराँ अनुसार लेख लिखिआ हुंदा है। अकाल पुरखु दा सेवक उस दी सिणति सालाह दे रंग विच मसत रहिंदा है। **दीनाँ दे दुख दूर करन वाला अकाल पुरखु जिस मनुख उते दडिआल हुंदा है, उस मनुख दा इह मन अकाल पुरखु दी सिणति सालाह दे रंग विच रंगिआ रहिंदा है।**

हरि कीरति साधसंगति है सिरि करमन कै करमा ॥ कहू नानक तिसु भडिण परापति जिसु पुरब लिखे का लहना ॥८॥ तेरो सेवक इह रंगि माता ॥ भडिण क्रिपालु दीन दुख भंजनु हरि हरि कीरतनि इहु मनु राता ॥ रहाउ दूजा ॥१॥३॥ (६४२)

इस सरीर रूपी किलहे विच जगत दा राजा अकाल पुरखु आप वसदा है, परंतू विकाराँ दे सुआदाँ विच ठीठ होड़े मनुख नूं आपणे अंदर वसदे होड़े अकाल पुरखु दे मिलाप दा कोड़ी आनंद नहीं आउंदा है। जिस मनुख उते दीनाँ उते दडिआ करन वाले अकाल पुरखु ने आपणी किरपा कीती, उस ने गुरू दे सबद दुआरा अकाल पुरखु दे नामु दा रस चूख के वेख लिआ है कि इह सच मुच ही मिठा है। **गुरू दा सबद आपणे मन विच वसाण नाल मनुख दे अंदरों विकाराँ दा जहर दूर हो जाँदा है, ते गुरू दी संगति विच बैठीआँ कोड़ा सुभाउ मिठा हो जाँदा है। इस लड़ी गुरू दे चरनाँ विच लिव ला के अकाल पुरखु दी सिणति सालाह करिआ करो, किउंकि अकाल पुरखु दे नामु दा रस दुनीआ दे होर सभ रसाँ नालों मिठा है।**

गुडुड़ी पूरबी महला ४ ॥ इसु गड़ महि हरि राम राडि है किछु सादु न पावै थीठा ॥ हरि दीन दडिआलि अनुग्रह कीआ हरि गुर सबदी चखि डीठा ॥१॥ राम हरि कीरतनु गुर लिव मीठा ॥१॥ रहाउ ॥ (१७१)

सतिगुरु दे दीदार दी बरकति नाल मनुख आपणे अंदरों त्रिशना दी अग बुझा लैदा है। मनुख आपणे आप नूं सतिगुरु अगे अरपन करके, सतिगुरु नूं मिल के आपणे मन विचों हउमै मार लैदा है। सतिगुरु दी संगति विच रहि के मनुख दा मन विकाराँ वाले पासे डोलदा नहीं, किउंकि सतिगुरु दी सरन पै के मनुख आतमक जीवन देण वाली गुरबाणी उचारदा रहिंदा है। सतिगुरु दी किरपा दुआरा जदों मनुख अकाल पुरखु नाल डूँधी साँझ पा लैदा है, सदा थिर रहिण वाले अकाल पुरखु दे प्रेम रंग विच रंगिआ रहिंदा है, फिर उस मनुख दा हिरदा ठंडा ठार हो जाँदा है, उस दे मन विच शांती पैदा हो जाँदी है, ते उस नूं सारा जगत सदा थिर रहिण वाले अकाल पुरखु दा रूप ही दिसदा है। गुरू दी किरपा नाल मनुख अकाल पुरखु दा नामु जपदा है, ते हिरदे विच वसा के रूखदा है। **गुरू दी किरपा नाल मनुख अकाल पुरखु दा कीरतन गाड़िन करदा है, गुरबाणी दुआरा अकाल पुरखु दी सिणति सालाह करदा है। इस दा नतीजा इह निकलदा है कि सतिगुरू दी किरपा नाल मनुख दे सारे दुख कलेश मिट जाँदे हन, किउंकि गुरू दी मेहर नाल मनुख माडिआ दे मोह दे बंधनाँ तों ज्लासी पा लैदा है।**

गुडुड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ सतिगुर दरसनि अगनि निवारी ॥ सतिगुर भेटत हउमै मारी ॥ सतिगुर संगि नाही मनु डोलै ॥ अंम्रित बाणी गुरमुखि बोलै ॥१॥ सभु जगु साचा जा सच महि राते ॥ सीतल साति गुर ते प्रभ जाते ॥१॥ रहाउ ॥ संत प्रसादि जपै हरि नाउ ॥ संत प्रसादि हरि कीरतनु गाउ ॥ संत प्रसादि सगल दुख मिटे ॥ संत प्रसादि बंधन ते छुटे ॥२॥ (१८३)

अकाल पुरखु दे नामु रूपी तीरथ विच इशानान कर के सूचे जीवन वाला बण जाडीदा है। अकाल पुरखु दे नामु रूपी तीरथ विच इशानान कीतिआँ कोड़ाँ ग्रहणाँ समें कीते पुंनाँ दे फलाँ नालों वी वधीक फल मिल जाँदे हन। जिस मनुख दे हिरदे विच अकाल पुरखु दे चरन वस जाँदे हन, उस दे अनेकाँ जनमाँ दे कीते होड़े पाप नास हो जाँदे हन। जिस मनुख ने साध संगति विच टिक के अकाल पुरखु दी सिणति सालाह दा फल प्राप्त कर लिआ, उस नूं जमाँ दा रसता नजर नहीं आउंदा ते आतमक मौत उस दे किते नेड़े वी नहीं ढुकदी। जिस मनुख ने आपणे मन दा, आपणे बोलाँ दा ते आपणे कंमाँ दा आसरा, उस अकाल पुरखु दे नामु नूं बणा लिआ है, उस नूं संसार दा मोह हट जाँदा है, उस दे अंदरों विकाराँ दा जहर निकल जाँदा है। अकाल पुरखु ने आपणी मिहर कर के जिस मनुख नूं आपणा बणा लिआ, फिर उह मनुख सदा अकाल पुरखु दा जाप जपदा रहिंदा है, अकाल पुरखु दा भजन करदा रहिंदा है, ते अकाल पुरखु दी सिणति सालाह करदा रहिंदा है।

गुडुड़ी महला ५ ॥ हरि हरि नामि मजनु करि सूचे ॥ कोटि ग्रहण पुंन फल मूचे ॥१॥ रहाउ ॥ हरि के चरण रिदे महि बसे ॥ जनम जनम के किलविख नसे ॥१॥ साध संगि कीरतन फलु पाडिआ ॥ जम का मारगु दिसटि न आडिआ ॥२॥ मन बच क्रम

गोविंद अधारु ॥ ता ते छुटिए बिखु संसारु ॥३॥ करि किरपा प्रभि कीनो अपना ॥ नानक जापु जपे हरि जपना ॥४॥८६॥१५५॥ (१६७)

आपणे मन नूं समझाणा है, कि तूं उस अकाल पुरखु दी सिणति सालाह करदा रहू, जिस दा नामु जपिआँ हरेक किसम दा डर दूर हो जाँदा है, हरेक तरहाँ दी बिपता टल जाँदी है, विकाराँ वल दौड़दा मन टिकाणे आ जाँदा है, कोड़ी दुख पोह नहीं सकदा, ते अंदरों हउमै दूर हो जाँदी है, पंजे कामादिक विकार काबू आ जाँदे हन, आतमक जीवन देण वाला नामु जल हिरदे विच झिक्ठा कर सकदे हाँ, माडिआ दी त्रेह बुझ जाँदी है ते अकाल पुरखु दी दरगाह विच कामयाब हो जाडीदा है, पिछले कीते होइे कीड़ाँ पाप मिट जाँदे हन, ते अगाँह वासते भले मनुख बण जाडीदा है, मन विचों विकाराँ दी सारी मैल दूर हो जाँदी है, मनुख दे अंदर हर वेले आतमक आनंद दी रौ चली रहिंदी है, आतमक आनंद मिलदा है, आतमक अडोलता विच टिकाणा मिल जाँदा है। गुरू जिस मनुख दे हिरदे विच अकाल पुरखु दा नामु जपण दा उपदेश वसा देंदा है, उस मनुख उते गुरू ने मानो सभ तों वधीआ किसम दी मिहर दी नज़र कर दिती है। जिस मनुख नूं पूरा गुरू मिल पिआ, उस ने अकाल पुरखु दी सिणति सालाह नूं आपणी आतमा वासते सुआदला भोजन बणा लिआ। परंतू उही मनुख अकाल पुरखु दे नामु विच जुड़दा है, जेहड़ा गुरू दे सबद दी वीचार करदा है ते उस अनुसार सेवा ते अमल करदा है, उह मनुख गुरू दी सरन विच पिआ रहिंदा है, ते अकाल पुरखु दे नामु विच जुड़िआ रहिंदा है। गुरू उस मनुख नूं मिलदा है, जिस दे मथे उते भाग जाग पैण। फिर उस मनुख दे हिरदे विच अकाल पुरखु आ वसदा है, उस मनुख दा मन सरीर ते हिरदा ठंढा ठार हो जाँदा है, ते विकाराँ वलों सुचेत हो जाँदा है। **इस लड़ी आपणे मन नूं समझाणा है, कि तूं अकाल पुरखु दी इहो जिही सिणति सालाह करदा रहू, जेहड़ी तेरी इस झिंदगी विच वी कंम आवे, ते परलोक विच वी तेरे कंम आवे।**

गुडुड़ी महला ५ ॥ गुर सेवा ते नामे लागा ॥ तिस कडु मिलिआ जिसु मसतकि भागा ॥ तिस कै हिरदै रविआ सोडि ॥ मनु तनु सीतलु निहचलु होडि ॥१॥ अँसा कीरतनु करि मन मेरे ॥ इहा उहा जो कामि तेरे ॥१॥ रहाउ ॥ (२३६)

जिस मनुख दा पिआर अकाल पुरखु दे सोहणे चरनाँ नाल बण जाँदा है, गुरू दी किरपा नाल उस दा मन पवित्र हो जाँदा है। अकाल पुरखु दी सिणति सालाह विच जुड़ के उह मनुख विकाराँ वलों हर वेले सुचेत रहिंदा है। **इस लड़ी कीरतन ताँ ही किहा जा सकदा है, जे कर मनुख दा मन निरमल हो गिआ है, मनुख दा मन विकाराँ वलों सबद गुरू दा गिआन हासल करके जागरित हो गिआ है।**

चरन कमल गोविंद रंगु लागा ॥ संत प्रसादि भडे मन निरमल हरि कीरतन महि अनदिनु जागा ॥१॥ रहाउ ॥ (३४३)

जदों दी गुरू ने मैनुं अकाल पुरखु दे नामु दी दस पाडी है, उदों तों मै अकाल पुरखु दा नामु चेते करन तों बिना झिक घडी, झिक पल वी नहीं रहि सकदा हाँ। मै हर वेले अकाल पुरखु दा नामु जपदा रहिंदा हाँ, मै हर वेले अकाल पुरखु दी सिणति सालाह करदा रहिंदा हाँ। इस लड़ी हर रोज़ दिन रात कीरतनु करदे रहिणा है, ते उह ताँ ही संभव है, जे कर असी हर वेले गुरबाणी दुआरा अकाल पुरखु दी सिणति सालाह करदे रहिंदे हाँ।

हडु अनदिनु हरि नामु कीरतनु करडु ॥ सतिगुरि मो कडु हरि नामु बताडिआ हडु हरि बिनु खिनु पलु रहि न सकडु ॥१॥ रहाउ ॥ (३६६)

अकाल पुरखु दी सिणति सालाह आतमक जीवन देण वाला रस है, कोड़ी विरला भागाँ वाला मनुख ही इह अंम्रित रस पीदा है। जिस सेवक नूं अकाल पुरखु दे नामु दा वज़ीण मिल जाँदा है, उह आपणे हिरदे विच इह अंम्रित नामु सदा जप जप के आतमक जीवन हासल करदा रहिंदा है।

अंम्रित रसु हरि कीरतनो को विरला पीवै ॥ वजहु नानक मिलै इकु नामु रिद जपि जपि जीवै ॥४॥१४॥११६॥ (४००)

अकाल पुरखु दे नामु ज्ञाने दी बरकति नाल, असी सतिगुरू दे अपार सबद दुआरा सदा हर वेले अकाल पुरखु दा कीरतनु, भाव अकाल पुरखु दे गुण गाउंदे रहिंदे हाँ। सतिगुरू दा सबद, जो हरेक जुग विच अकाल पुरखु दे नामु दी दाति वरताउण वाला है, असी सदा उचारदे रहिंदे हाँ। **इस लड़ी गुरू दे सबद दुआरा ही अकाल पुरखु दा नामु जपिआ जा सकदा है, गुरू दे सबद दुआरा ही अकाल पुरखु दा कीरतन हो सकदा है, ते गुरू दे सबद दुआरा ही अकाल पुरखु दे गुण गाइ जा सकदे हन।**

अनदिनु कीरतनु सदा करहि गुर कै सबदि अपारा ॥ सबदु गुरू का सद उचरहि जुगु जुगु वरतावणहारा ॥ (५६३)

उपर लिखिआ सबद सपूश्ट करदा है कि कीरतन सिर्फ गुरू दे सबद दा ही हो सकदा है, भाव कीरतन सिर्फ सूची बाणी दा ही हो सकदा है, होर किसे तरहाँ दी क्ची बाणी दा कीरतन गुरमति अनुसार प्रवान नहीं है।

जेहड़ा मनुख सतिगुरू दी गुरबाणी गाडिन करदा है, गुरबाणी नाल पिआर करदा है, गुरबाणी दुआरा अकाल पुरखु दे गुणाँ दी वीचार करदा है, गुरबाणी कीरतन दुआरा अकाल पुरखु दी सिणति सालाह करदा है, अकाल पुरखु उस मनुख दा

मददगार बण जाँदा है, ते उस मनुख दा जीवन सुखदाडी ते आतमक आनंद वाला बण जाँदा है। इस लड़ी पूरे गुरू दी सिणति सालाह दी बाणी सदा पड़िहआ समझिआ ते वीचारिआ करो, ते अकाल पुरखु नामु जपु के आतमक आनंद माणिआ करो, अकाल पुरखु दी सिणति सालाह ही मनुख दे अंदर आतमक आनंद पैदा करदी है। इस लड़ी सदा काडिम रहिण वाले अकाल पुरखु दा नामु सिमरन करदे रिहा करो, सिमरन दी बरकति नाल साध संगति विच सदा आतमक आनंद माण सकदे हाँ, ते, फिर अकाल पुरखु कदे वी मनुख दे मन विचोँ भुलदा नहीं।

सोरठि महला ५ ॥ पारब्रह्म होआ सहाडी कथा कीरतनु सुखदाडी ॥ गुर पूरे की बाणी जपि अनदु करहु नित प्राणी ॥१॥ हरि साचा सिमरहु भाडी ॥ साध संगि सदा सुखु पाडीऔ हरि बिसरि न कबहू जाडी ॥ रहाउ ॥ (६१६)

पूरे सतिगुरु ने मेरे उते बज्जश कीती है। सतिगुरु ने मैनुँ अकाल पुरखु दा नामु कीरतन करन लड़ी दिता है, जिस दी बरकति नाल मेरी उँची आतमक अवसथा बण गडी है। इस लड़ी अकाल पुरखु दे नामु दा कीरतन पूरे सतिगुरु दी बज्जश नाल ही हो सकदा है।

सतिगुरि पूरे कीनी दाति ॥ हरि हरि नामु दीए कीरतन कउ भडी हमारी गाति ॥ रहाउ ॥ (६८१)

जे कर मनुख दड़िआल सरब विआपी अकाल पुरखु दे नामु दी वडिआडी करे ताँ अकाल पुरखु मनुख ते आपणी मेहर करदा है, ते उस मनुख दे दुखाँ दा नास कर देंदा है। उह दड़िआल सरब विआपी अकाल पुरखु अजेहे सुभाअ वाला है, कि अकाल पुरखु दी सिणति सालाह करन वाला उह मनुख फिर माडिआ दे मोह विच नहीं फसदा है।

सलोक ॥ दड़िआ करणं दुख हरणं उचरणं नाम कीरतनह ॥ दड़िआल पुरखु भगवानह नानक लिपत न माडिआ ॥१॥ (७०६-७१०)

जिस थाँ ते अकाल पुरखु दा नामु जपिआ जाँदा है, उह थाँ भागाँ वाला हो जाँदा है, उथे व्सण वाले वी भागाँ वाले बण जाँदे हन। जिस थाँ ते अकाल पुरखु दी कथा कीरतनु वीचार, अकाल पुरखु दी सिणति सालाह बहुत हुंदी रहे, उह थाँ आतमक आनंद दा, आतमक अडोलता दा टिकाणा ते सोमा बण जाँदा है।

धनु सु थानु बसंत धनु जह जपीऔ नामु ॥ कथा कीरतनु हरि अति घना सुख सहज बिस्रामु ॥३॥ (८१६)

साध संगति विच अकाल पुरखु दी सिणति सालाह दीआँ कथा कहाणीआँ बारे वीचार सुणी जाँदी है। उथे दिन रात हर वेले अकाल पुरखु दीआँ कथा कहाणीआँ हुंदीआँ रहिंदीआँ हन, कीरतन हुंदा रहिंदा है, ते आतमक आनंद लड़ी हुलारे पैदा करन वाली रौ सदा चलदी रहिंदी है।

बिलावलु महला ५ ॥ संतन कै सुनीअत प्रभ की बात ॥ कथा कीरतनु आनमद मंगल धुनि पूरि रही दिनसु अरु राति ॥१॥ रहाउ ॥ (८२०)

गुरू दे सबद दुआरा अकाल पुरखु दी सिणति सालाह दा गीत गाडिआ करो, किउंकि अकाल पुरखु नूँ व्स करन दा इह सभ तौँ सेशट बीज मंत्र है। अकाल पुरखु दे कीरतन दी बरकति नाल भविख विच निआसरे जीव नूँ वी आसरा मिल जाँदा है। इस लड़ी पूरे गुरू दे चरनाँ ते टिकिआ रहि, भाव पूरे गुरू दी सिखिआ अनुसार जीवन बतीत कर, इस तरहाँ करन नाल कडी जनमाँ तौँ माडिआ दे मोह दी नींद विच सुता होडिआ मनुख वी जाग जाँदा है। जिस मनुख ने अकाल पुरखु दे नामु दा जाप जपि लिआ, जिस मनुख दे हिरदे विच गुरू दी किरपा नाल अकाल पुरखु दा नामु व्स जाँदा है, उह मनुख संसार रूपी समुंदर तौँ पार लंघ जाँदा है।

रामकली महला ५ ॥ बीज मंत्र हरि कीरतनु गाउ ॥ आगे मिली निथावे थाउ ॥ गुर पूरे की चरणी लागु ॥ जनम जनम का सोडिआ जागु ॥१॥ हरि हरि जापु जपला ॥ गुर किरपा ते हिरदै वासै भुजलु पारि परला ॥१॥ रहाउ ॥ (८६१)

पिआरे अकाल पुरखु दे नामु दा ज्ञाना अइसा है, जिस विच उस दा नामु ही रतन ते जवाहरात हन, उस विच सत संतोख ते उँचे आतमक जीवन दी सूझ वरगे कीमती पदारथ हन। अकाल पुरखु दे नामु दा ज्ञाना सुख, आतमक अडोलता ते दड़िआ दा सोमा है, परंतू उह नामु दा ज्ञाना अकाल पुरखु दे भगताँ दे सपुरद होडिआ है। पिआरे अकाल पुरखु दे नामु दा ज्ञाना अइसा है, कि उस नूँ आप वरतदिआँ ते होरनाँ नूँ वंडदिआँ, उस विच किसे तरहाँ दी कोडी कमी नहीं आउंदी है। उस अकाल पुरखु दे ज्ञाने दा अंत नहीं ल्भिआ जा सकदा, ते उस अकाल पुरखु दी हसती दा उरला परला बंन वी नहीं ल्भिआ जा सकदा। पिआरे अकाल पुरखु दे नामु दा ज्ञाना अइसा है, जिस विच उस दा कीरतन इक अजिहा हीरा है, जिस दा कोडी मुल नहीं पै सकदा, उस कीरतन दी बरकति नाल अकाल पुरखु दे मिलाप दा आनंद प्रापत हुमुदा है, ते उस मालक दे गुणाँ दा ज्ञाना समुंदर दी तरहाँ बहुत डूंगा है। गुरबाणी दे कीरतन दी बरकत नाल पैदा होडी इक रस जारी रहिण वाली सिणति सालाह दी रौ मनुख लड़ी सरमाडिआ है, परंतू अकाल पुरखु ने इस ज्ञाने दी कुंजी संताँ (सबद गुरू) दे हथ विच रूखी होडी है। जिस हिरदे घर विच अकाल पुरखु दे नामु दा ज्ञाना आ व्सदा है, उथे अइसी समाधी बणी रहिंदी है, जिस विच

कोड़ी माडिक फुरना नहीं उँठदा, उस हिरदे रूपी गुण विच मनुख दी सुरती टिकी रहिंदी है, ते उस हिरदे घर विच सिरण पूरन अकाल पुरखु दा निवास बणिआ रहिंदी है। जिस भगत दे हिरदे विच उह ज्ञाना परगट हो जाँदा है, उस भगत नाल अकाल पुरखु आपणा मिलाप आप बणा लैदा है, फिर उस हिरदे घर विच ज़ुशी त्रमी जाँ जनम मरन दे गेड़ दे डर दा कोड़ी असर नहीं हुंदा। सिरण उस मनुख ने गुरू दी संगति विच रहि के अकाल पुरखु दा नामु रूपी धन ल्भा है, जिस नूँ अकाल पुरखु ने आप किरपा कर के इह नामु धन दिवाडिआ है। हे दडिआ दे सोमे अकाल पुरखु! तेरे सेवक नानक दी वी इहि बेनती है, कि तेरा नामु मेरा सरमाडिआ बणिआ रहे, ते तेरा नामु मेरी हर वेले दी वरतण वाली वसतू बणी रहे।

रामकली महला ५ ॥ रतन जवेहर नाम ॥ सतु संतोखु गिआन ॥ सूख सहज दडिआ का पोता ॥ हरि भगता हवालै होता ॥१॥ मेरे राम को भंडारु ॥ खात खरचि कछु तोटि न आवै अंतु नहीं हरि पारावारु ॥१॥ रहाउ ॥ कीरतनु निरमोलक हीरा ॥ आनमद गुणी गहीरा ॥ अनहद बाणी पूंजी ॥ संतन हथि राखी कूंजी ॥२॥ सुंन समाधि गुफा तह आसनु ॥ केवल ब्रहम पूरन तह बासनु ॥ भगत संगि प्रभु गोसटि करत ॥ तह हरख न सोग न जनम न मरत ॥३॥ करि किरपा जिसु आपि दिवाडिआ ॥ साध संगि तिनि हरि धनु पाडिआ ॥ दडिआल पुरख नानक अरदासि ॥ हरि मेरी वरतणि हरि मेरी रासि ॥४॥२४॥३५॥
(८६३)

जोती जोति समाण वेले गुरू अमरदास साहिब ने इहि समझाडिआ सी, कि हे भाड़ी! मेरे पिछों निरोल कीरतन करिए। केसो गोपाल अकाल पुरख दे पंडिताँ नूँ सूद घुलिए, भाव सतिसंगत नूँ सूद घुलिए जो आ के अकाल पुरख दी कथा वारता रूपी पुराण पड़हन, भाव गुरबाणी दुआरा अकाल पुरखु दी सिणति सालाह ते सबद दी वीचार करना। चेता रूखिए, कि मेरे पिछों अकाल पुरख दी कथा ही पड़हनी चाहीदी है, गुरबाणी दुआरा अकाल पुरख दा नामु ही सुणना है, बेबाण वी गुरू नूँ केवल अकाल पुरख दा पिआर ही चंगा लगदा है। गुरू ताँ पिंड पतलि, किरिआ, दीवा अते फुल, इनहाँ सभनाँ नूँ सतिसंगत तों सदके करदा है, भाव गुरबाणी दे कीरतन विच ही इह सभ तरहाँ दीआँ किरिआवाँ आ जाँदीआँ हन। अकाल पुरख नूँ पिआरे लगे होडे गुरू ने उस वेले डिउं समझाडिआ कि सतिगुरू नूँ सुजाण अकाल पुरख मिल पिआ है। **गुरू अमरदास जी ने सोढी गुरू रामदास जी नूँ गुर सबदु, गुरिआडी दे तिलक तौर ते दिता अते गुरू दी सबद रूपी सूची राहदारी बज्शी।**

अंते सतिगुरू बोलिआ मै पिछै कीरतनु करिअहु निरबाणु जीउ ॥ केसो गोपाल पंडित सदिअहु, हरि हरि कथा पड़हि पुराणु जीउ ॥ हरि कथा पड़ीअै, हरि नामु सुणीअै, बेबाणु, हरि रंगु गुर भावडे ॥ पिंडु पतलि किरिआ दीवा फुल, हरि सरि पावडे ॥ हरि भाडिआ सतिगुरू बोलिआ, हरि मिलिआ पुरखु सुजाणु जीउ ॥ रामदास सोढी तिलकु दीआ, गुर सबदु सचु नीसाणु जीउ ॥५॥ (६२३)

इक्ले साज़ दी सुर विच सरीर झूमदा है ते मन सौ जाँदा है, इस लड़ी सिख ने अकाल पुरखु दे कीरतन नाल आतमिक तौर ते वी जागणाँ है, ताँ जो उस दे हिरदे विच अकाल पुरखु दे नामु दा चानण हो जावे। लोक ज़ुशी आदिक दे मौके ते घराँ विच दीवे मोमबूतीआँ आदिक बाल के चानण करते हन, परंतू मनुख दे हिरदे घर विच अकाल पुरखु दे नामु दा चानण हो जाणा, इह दुनिआवी घराँ विच होर सभ तरहाँ दे चानण करन नालों वधीआ चानण है। सदा अकाल पुरखु दा ही नामु सिमरना, इह सभ तरहाँ दे सिमरनाँ नालों सोहणा सिमरन है। माडिआ दे मोह विचों निकलण लड़ी लोक ग्रिहसत जीवन तिआग देंदे हन, परंतू काम क्रोध लोभ आदिक विकाराँ नूँ हिरदे विचों तिआग देणा, इह होर सारे तिआगाँ नालों स्पेशट तिआग है। **गुरू पासों अकाल पुरखु दी सिणति सालाह दी जैर मंगणा, होर सारीआँ मंगाँ नालों वधीआ मंग है।** देवी आदिक दी पूजा वासते लोक जगराते करते हन, परंतू अकाल पुरखु दी सिणति सालाह विच जागणा, होर सारे जगरातरिआँ नालों उँतम जगराता है। गुरू दे चरनाँ विच मन दा पिआर बण जाणा, होर सारीआँ लगनाँ नालों वधीआ लगन है। परंतू, इह जुगति उसे मनुख नूँ प्रापत हुंदी है, जिस दे म्थे उँते अकाल पुरखु दी मिहर दुआरा भाग जाग पैण। **अंत विच गुरू साहिब समझाँदे हन कि, जिहड़ा मनुख अकाल पुरखु दी सरन विच आ जाँदा है, उस नूँ हरेक तरहाँ दा सोहणा गुण प्रापत हो जाँदा है।**

१६ सतिगुरू प्रसादि ॥ चादना चादनु आँगनि प्रभ जीउ अंतरि चादना ॥१॥ आराधना अराधनु नीका हरि हरि नामु अराधना ॥२॥ तिआगना तिआगनु नीका कामु क्रोधु लोभु तिआगना ॥३॥ मागना मागनु नीका हरि जसु गुर ते मागना ॥४॥ जागना जागनु नीका हरि कीरतन महि जागना ॥५॥ लागना लागनु नीका गुर चरणी मनु लागना ॥६॥ इह बिधि तिसहि परापते जा कै मसतकि भागना ॥७॥ कहु नानक तिसु सभु किछु नीका जो प्रभ की सरनागना ॥८॥१॥४॥ (१०१८)

जगत विच भावें अनेकाँ ही मितर साथी बणा लड़ीडे, परंतू गुरू तों बिना ते अकाल पुरखु तों बिना विकाराँ दे समुंदर विच डुबदे जीव दा कोड़ी मददगार नहीं बणदा है। गुरू दी सेवा, भाव गुरू दी दूसी होड़ी सबद वीचार ही विकाराँ तों ज्लासी करवाउण लड़ी सहाड़ी हुंदी है, ते जेहड़ा मनुख हर वेले अकाल पुरखु दा कीरतनु, भाव अकाल पुरखु दी सिणति सालाह करदा रहिंदी है, उह विकाराँ तों मुक्त हो जाँदा है।

मीत सखे केते जग माही ॥ बिनु गुर परमेसर कोडी नाही ॥ गुर की सेवा मुकति पराइणि अनदिनु कीरतनु कीना हे ॥११॥
(१०२८)

जदों किसे मनुख दे चित विच भाव हिरदे विच अकाल पुरखु आ व्सदा है, उदों उस दे मन अंदर बड़ा आनंद बण जाँदा है, उस दे सारे दुखाँ दा नास हो जाँदा है, उस दी हरेक सधर, मन दी हरेक इछाँ पूरी हो जाँदी है, फिर उह कदे वी किसे तरहाँ दा कोडी चिंता णिकर नहीं करदा है। पूरे गुरू दुआरा जिस मनुख दे हिरदे विच सभ दा पातिशाह अकाल पुरखु परगट हो जाँदा है, ताँ अकाल पुरखु उस मनुख दे मन अंदर रंग ला देंदा है, आतमक आनंद बणा देंदा है। जदों किसे मनुख दे हिरदे विच अकाल पुरखु आ व्सदा है, उदों उह मानो सभ दा राजा बण जाँदा है, उस दे सारे कंम सिरे चड़ह जाँदे हन, उह गूड़हे आतमक प्रेम आनंद विच मसत रहिंदा है, उह सदा ही खिड़े म्थे रहिंदा है। जदों अकाल पुरखु किसे मनुख दे हिरदे विच आ व्सदा है, उदों उह मनुख सदा लडी अकाल पुरखु दे नामु धन दा शाह बण जाँदा है, उह सदा लडी माडिआ दी जतर भटकण तों बच जाँदा है, उह सारे आतमक आनंद माणदा रहिंदा है, उस नूं किसे दी मुथाजी नहीं रहि जाँदी। जदों अकाल पुरखु किसे मनुख दे हिरदे विच आ परगटदा है, उदों उह मनुख आतमक अडोलता दा टिकाणा ल्भ लैदा है, उह उस सुनि अवसथा भाव आतमक अवसथा विच लीन रहिंदा है, जिथे माडिआ वाले फुरने नहीं उँठदे, उह मनुख सदा अकाल पुरखु दी सिणति सालाह करदा रहिंदा है, उस दा मन अकाल पुरखु नाल पतीज जाँदा है। **इस लडी कीरतनु तौ हो सकदा है, जे कर पूरे गुरू दुआरा अकाल पुरखु दी सिणति सालाह करन नाल, अकाल पुरखु मनुख दे चित विच, भाव उस मनुख दे हिरदे घर विच व्स जाँदा है।**

भैरु महला ५ ॥ चीति आवै ताँ महा अनमद ॥ चीति आवै ताँ सभि दुख भंज ॥ चीति आवै ताँ सरधा पूरी ॥ चीति आवै ताँ कबहि न झूरी ॥१॥ अंतरि राम राडि प्रगटे आडि ॥ गुरि पूरे दीए रंगु लाडि ॥१॥ रहाउ ॥ चीति आवै ताँ सरब को राजा ॥ चीति आवै ताँ पूरे काजा ॥ चीति आवै ताँ रंगि गुलाल ॥ चीति आवै ताँ सदा निहाल ॥२॥ चीति आवै ताँ सद धनवंता ॥ चीति आवै ताँ सद निभरंता ॥ चीति आवै ताँ सभि रंग माणे ॥ चीति आवै ताँ चूकी काणे ॥३॥ चीति आवै ताँ सहज घुर पाडिआ ॥ चीति आवै ताँ सुनि समाडिआ ॥ चीति आवै सद कीरतनु करता ॥ मनु मानिआ नानक भगवंता ॥४॥८॥२१॥
(११४१)

छे शासतर हन (घर = शासतर = साँख, निआडि, वैशेशिक, योग, मीमांसा, वेदाँत), छे ही इनहाँ शासतराँ दे चलाण वाले हन, (गुर = इनहाँ शासतराँ दे करता = कपल, गोतम, कणाद, पतंजली, जैमनी, विआस), छे ही इनहाँ दे उपदेस भाव सिधाँत हन। पर इनहाँ सारिआँ दा मूल गुरू, अकाल पुरखु इक है। इह सारे सिधाँत उस इक अकाल पुरखु दे ही अनेकाँ वेस हन, अकाल पुरखु दी हसती दे प्रकाश दे रूप हन। **जिस सतिसंग घर विच अकाल पुरखु दी सिणति सालाह हुंदी है, उस घर नूं साँभ र्ख, उस सतिसंग दा आसरा लडी र्ख, डिसे विच तेरी भलाडी है।** जिवें विसुडे, चसे, घड़ीआँ, पहर, थिताँ, वार, महीना, आदिक अते होर अनेकाँ रुताँ हन, परंतू सूरज इको ही है, जिस दे इह सारे वख वख रूप हन, तिवें, ही अकाल पुरखु दे इह सारे सिधाँत आदिक अनेकाँ ही सरूप हन।

रागु आसा महला १ ॥ छिअ घर छिअ गुर छिअ उपदेस ॥ गुर गुर इको वेस अनेक ॥१॥ बाबा जै घरि करते कीरति होडि ॥ सो घरु राखु वडाडी तोडि ॥१॥रहाउ ॥ विसुडे चसिआ घड़ीआ पहरा थिती वारी माहु होआ ॥ सूरजु इको रुति अनेक ॥ नानक, करते के केते वेस ॥२॥२॥ ११२२२

हे सरब विआपक अकाल पुरखु! तू ही सारे गुणाँ दा ज्ञाना हैं। मैनुं तेरे ही सोहणे चरणाँ दा आसरा है। मेरे उते मेहर कर, जदों तक मेरे सरीर विच साह च्ल रिहा है, मै तेरा नामु सिमरदा रहाँ, तेरी सिणति सालाह करदा रहाँ।

चरन कमल का आसरा प्रभ पुरख गुणतासु ॥ कीरतन नामु सिमरत रहउ जब लगु घटि सासु ॥१॥ रहाउ ॥ (८१८)

उही मनुख अकाल पुरखु दे नामु विच जुड़दा है, जेहड़ा गुरू दी सरन विच रहिंदा है, गुरू दी सेवा करदा है, गुरू दे सबद दी वीचार करदा है ते उस अनुसार जीवन बतीत करदा है। अकाल पुरखु दा नामु उस मनुख नूं मिलदा है, जिस दे म्थे उते भाग जाग पैण। गुरू दे सबद दी वीचार दुआरा अकाल पुरखु, उस मनुख दे हिरदे विच व्सदा रहिंदा है, ते, उस मनुख दा मन ते सरीर ठंढा ठार हो जाँदा है, ते विकाराँ वलों अडोल हो जाँदा है। **इस लडी हे मेरे मन! तूं गुरू दे सबद दी वीचार दुआरा अकाल पुरखु दी इहो जिही सिणति सालाह करदा रहू, जेहड़ी तेरी इस ज़िंदगी विच वी कंम आवे, ते परलोक विच वी तेरे कंम आवे।**

गुडुडी महला ५ ॥ गुर सेवा ते नामे लागा ॥ तिस कडु मिलिआ जिसु मसतकि भागा ॥ तिस कै हिरदै रविआ सोडि ॥ मनु तनु सीतलु निहचलु होडि ॥१॥ असा कीरतनु करि मन मेरे ॥ इहा उहा जो कामि तेरे ॥१॥ रहाउ ॥ (२३६)

गुरू ताँ सभ तौ वधीआ किसम दी मिहर दी नज़र सभ उपर करदा है, परंतू इह सुभ दिसटी उही मनुख प्राप्त करदे हन, जिहड़े मनुख अकाल पुरखु दी मिहर सदका नामु जपण दा उपदेश आपणे हिरदे विच वसा लैदे हन। जिस मनुख नूं पूरा सतिगुरू मिल पिआ, उस ने सदा लड़ी अकाल पुरखु दी सिणति सालाह नूं आपणी आतमा वासते सुआदला भोजन बना लिआ। इस लड़ी अखंड कीरतनु ताँ ही हो सकदा है जे कर मनुख गुरू दे सबद दी वीचार दुआरा सेवा विच लुगिआ रहे ते अकाल पुरखु दी सिणति सालाह दुआरा उस दे नामु विच सदा लीन रहे।

गुरि सुभ दिसटि सभ उपरि करी ॥ जिस कै हिरदै मंत्र दे हरी ॥ अखंड कीरतनु तिनि भोजनु चूरा ॥ कहु नानक जिसु सतिगुरू पूरा ॥८॥२॥ (२३६)

हे अकाल पुरखु! तेरे नामु ने मेरे वासते उह मौज बना दिती है, जो राजे लोकाँ नूं राज करन तौ मिलदी प्रतीत हुंदी है। जदौं मै तेरा कीरतनु गाड़िन करदा हाँ, तेरी सिणति सालाह दे गीत गाड़िन करदा हाँ, ताँ मै नूं जोगीआँ वाला जोग प्राप्त हो जाँदा है। दुनीआ वाला सुख ते ण्कीरी वाला सुख दोवें ही मै नूं अकाल पुरखु दी सिणति सालाह विचौं मिल जाँदे हन। हे अकाल पुरखु! जदौं तौ सतिगुरू ने आपणे उपदेश दुआरा मेरे अंदरौं माड़िआ दी जतर भटकणा पैदा करन वाले पड़दे खोहल दिते हन ते तेरे नालों मेरी विथ मुक गड़ी है, उदौं तौ तेरे एट आसरे रहिण नाल मेरे वासते सारे सुख ही सुख बण गड़े हन।

आसा महला ५ ॥ राज लीला तेरै नामि बनाई ॥ जोगु बनिआ तेरा कीरतनु गाड़ी ॥१॥ सरब सुखा बने तेरै एलै ॥ भ्रम के परदे सतिगुरू खोले ॥१॥ रहाउ ॥ (३८५)

अकाल पुरखु दे नामु धन दी किरपा नाल मै उह धन दौलत दी थैली प्राप्त कर लड़ी है, जिस नाल मेरे संसार दे सारे कंम सिरे चड़ह सकदे हन। गुरबाणी दुआरा अकाल पुरखु दी सिणति सालाह करन नाल मै संसार रूपी समुंदर तौ पार लंघ सकदा हाँ, परंतू अकाल पुरखु दी सिणति सालाह दा गीत वडे भागाँ नाल ही गाड़िआ जा सकदा है। हे अकाल पुरखु! जे तूं आप सानूं जीवाँ नूं आपणी सिणति सालाह दी दाति देवें ताँ ही सानूं इह दात मिल सकदी है।

गुडुड़ी महला ५ ॥ थाती पाड़ी हरि को नाम ॥ बिचुर संसार पूरन सभि काम ॥ १॥ वडभागी हरि कीरतनु गाड़ीअै ॥ पारब्रहम तूं देहि त पाड़ीअै ॥१॥ रहाउ ॥ (१६६-१६७)

अकाल पुरखु जल विच धरती विच आकाश विच हर थाँ विआपक है, उह अकाल पुरखु आपणे आप विच पूरन है ते हरेक जीव लड़ी इक मितर दी तरहाँ सहाइक बणदा है। निता प्रती उस दे गुण गाड़िन करन नाल सभ किसम दे भ्रम ते वहिम नास हो जाँदे हन। उह अकाल पुरखु जागदिआँ होड़िआ, सुतिआँ होड़िआ हर वेले जीव दे नाल रहिंदा है ते उस दी रूखिआ करदा है। उस अकाल पुरखु दी हमेशाँ सिणति सालाह करदे रहिंणा चाहीदा है, जिस दे सिमरन दी बरकति नाल मौत दा डर नहीं रहि जाँदा ते आतमक मौत नेड़े नहीं ढुक सकदी। इस लड़ी सिमरन करन लड़ी अकाल पुरखु दे निता प्रती गुण गाड़िन करने हन, जिनहाँ नाल सभ किसम दे भ्रम ते वहिम नास हो सकण।

गुडुड़ी महला ५ ॥ जलि थलि महीअलि पूरन हरि मीत ॥ भ्रम बिनसे गाड़े गुण नीत ॥१॥ उठत सोवत हरि संगि पहरूआ ॥ जा कै सिमरणि जम नहीं डरूआ ॥१॥ रहाउ ॥ (१६६-१६७)

अकाल पुरखु दे भगत उस नूं चेते करदे रहिंदे हन ते अकाल पुरखु दी सिणति सालाह करदे रहिंदे हन, भगत सदा अकाल पुरखु दा कीरतन गाड़िन करदे रहिंदे हन ते अकाल पुरखु दा सुख देण वाला नामु जपदे रहिंदे हन। अकाल पुरखु ने आपणे भगताँ नूं सदा लड़ी नामु जपण दा गुण बजशिआ है, जो दिनों दिन सवाड़िआ वधदा रहिंदा है। अकाल पुरखु ने हमेशा आपणे बिरद दी लाज रूखी है ते आपणे भगताँ नूं उनहाँ दे हिरदे घर विच अडोल कर दिता है, भाव, अकाल पुरखु आपणे भगताँ नूं माड़िआ दे पिछे नहीं डोलण देंदा है। निंदकाँ कोलों अकाल पुरखु लेखा मंगदा है ते बहुती सज़ा देंदा है। निंदक जिहो जिहा आपणे मन विच जाँ जीवन विच कमावदे हन, उहो जिहा फल उनहाँ नूं मिलदा है, किउंकि अंदर बैठ के वी कीता होड़िआ कंम वी ज़रूर परगट हो जाँदा है, भावें कोड़ी धरती विच किते वी लुक के कीता होवे। दास नानक अकाल पुरखु दी वडिआड़ी वेख के प्रसंन हो रिहा है। इस लड़ी अकाल पुरखु दे भगत बणन लड़ी, उस अकाल पुरखु दी सिणति सालाह दुआरा उस नूं चेते करना है, कीरतन गाड़िन करन लड़ी अकाल पुरखु दा सुख देण वाला नामु जपणा है, ताँ जो मन अंदरौं विकार दूर कीते जा सकण।

मः ४ ॥ हरि भगताँ हरि आराधिआ हरि की वडिआड़ी ॥ हरि कीरतनु भगत नित गाँवदे हरि नामु सुखदाड़ी ॥ हरि भगताँ नो नित नावै दी वडिआड़ी बखसीअनु नित चड़ै सवाड़ी ॥ हरि भगताँ नो थिरु घरी बहालिअनु अपणी पैज रखाड़ी ॥ निंदकाँ पासहु हरि लेखा मंगसी बहु देड़ि सजाड़ी ॥ जेहा निंदक अपणै जीड़ि कमावदे तेहो फलु पाड़ी ॥ अंदरि कमाणे सरपर उघड़ै भावै कोड़ी बहि धरती विचि कमाड़ी ॥ जन नानकु देखि विगसिआ हरि की वडिआड़ी ॥२॥ (३१६)

जदों दी सतिगुरु ने मैनु अकाल पुरखु दे नामु दी दस पाड़ी है, उदों तों मै अकाल पुरखु दे नामु सिमरन तों बिना डिक घड़ी पल वासते वी नहीं रहि सकदा हॉ। मै हर वेले अकाल पुरखु दा नामु जपदा हॉ, मै हर वेले अकाल पुरखु दी सिणति सालाह करदा हॉ। मेरे लड़ी अकाल पुरखु दी सिणति सालाह सुणनी ते अकाल पुरखु दा नामु जपणा ही जीवन दा मंतव है, इस लड़ी अकाल पुरखु दे नामु जपण तों बिना मै डिक पल लड़ी वी नहीं रहि सकदा हॉ। जिस तरहाँ हंस सरोवर तों बिना नहीं रहि सकदा है, उसे तरहाँ अकाल पुरखु दा भगत अकाल पुरखु दी सेवा भगती तों बिना नहीं रहि सकदा है। इस लड़ी अकाल पुरखु दे नामु दा कीरतन हर रोज करना है, ते अकाल पुरखु दी सिणति सालाह तों बिना डिक खिन पल वासते वी नहीं रहिणा है।

रागु आसावरी घरु १६ के २ महला ४ सुधंग ॥ १४ सतिगुरु प्रसादि ॥ हउ अनदिनु हरि नामु कीरतनु करउ ॥ सतिगुरि मो कउ हरि नामु बताइआ हउ हरि बिनु खिनु पलु रहि न सकउ ॥१॥ रहाउ ॥ हमरै स्रवणु सिमरनु हरि कीरतनु हउ हरि बिनु रहि न सकउ हउ डिकु खिनु ॥ जैसे हंसु सरवर बिनु रहि न सकै तैसे हरि जनु किउ रहै हरि सेवा बिनु ॥१॥ (३६६)

तीरथ यात्रा आदिक कोड़ा ही मिथे होड़े धारमिक करम करन नाल मनुख दा मन पवितर नहीं हो सकदा। मनुख दा मन साध संगति विच बैठण नाल माइआ दे मोह दी नीद विचों जाग सकदा है। कोड़ा तरहाँ दे करम कर के वी माइआ दी त्रिशना नहीं मिटदी, परंतू अकाल पुरखु दा नामु सिमरदिआँ सारे सुख मिल सकदे हन। इस लड़ी हे मेरी जीभे! अकाल पुरखु दी सिणति सालाह दे गीत गाइआ कर। संत जनाँ दे चरनाँ उते अनेकाँ वारी नमसकार करिआ कर, किउंकि संत जनाँ दे हिरदे विच अकाल पुरखु दे चरन वसदे हन।

कानड़ा महला ५ ॥ कीरति प्रभ की गाउ मेरी रसनाँ ॥ अनिक बार करि बंदन संतन उहाँ चरन गोबिंद जी के बसना ॥१॥ रहाउ ॥ (१२६८)

जदों तों गुरु ने मेरे हिरदे विच अकाल पुरखु लड़ी पिआर पैदा कर दिता है, उदों तों अकाल पुरखु दी सिणति सालाह मेरे मन नू पिआरी ल्गदी है, उदों तों मेरा मन अकाल पुरखु दे नामु विच जुड़िआ रहिंदा है। हे अकाल पुरखु! हे मेरे सुआमी! मेरे अंदर ताँघ है, कि मै अखाँ नाल तेरा दरशन करदा रहाँ, जीभ नाल तेरा नामु जपदा रहाँ, कनाँ नाल दिन रात तेरी सिणति सालाह सुणदा रहाँ, ते हिरदे विच तू मैनु हमेशाँ पिआरा ल्गदा रहे।

नैणी बिरहु देखा प्रभ सुआमी रसना नामु वखानी ॥ स्रवणी कीरतनु सुनउ दिनु राती हिरदै हरि हरि भानी ॥३॥ (११६६-१२००)

अकाल पुरखु दे नामु तों बिना माइक पदारथाँ दे सारे तरहाँ दे सुआद फिके हन। अकाल पुरखु दा कीरतन ही आतमक जीवन देण वाला रस है, इस लड़ी हमेशाँ अकाल पुरखु दा कीरतन ही गाणा चाहीदा है, ते जिहड़ा मनुख अकाल पुरखु दा कीरतन गाइन करदा रहिंदा है, उस दे अंदर दिन रात आतमक आनंद दे वाजे व्जदे रहिंदे हन। अकाल पुरखु दा नामु सिमरन करन नाल आतमक शाँती मिलदी है, बड़ा सुख प्राप्त हुंदा है, ते अंदरों सारे दुख कलेश मिट जाँदे हन। परंतू अकाल पुरखु दे नामु सिमरन दा इह लाभ साध संगति विच ही मिलदा है, ते जिहड़े मनुख गुरु दी संगति विच मिल बैठदे हन, उह आपणे हिरदे घर विच इह कमाड़ी लूद के लै आउंदे हन। अकाल पुरखु सभनाँ नालों उँचा है, उँचिआँ तों वी उँचा है, ते उस दे हद बने दा अंत नहीं पाइआ जा सकदा। मै उस अकाल पुरखु दी वडिआड़ी बिआन नहीं कर सकदा, किउंकि उस दी वडिआड़ी वेख के हैरान रहि जाइदा है।

सारग महला ५ ॥ फीके हरि के नाम बिनु साद ॥ अंघ्रित रसु कीरतनु हरि गाड़ीअै अहिनिसि पूरन नाद ॥१॥ रहाउ ॥ सिमरत साँति महा सुखु पाड़ीअै मिटि जाहि सगल बिखाद ॥ हरि हरि लाभु साध संगि पाड़ीअै धरि लै आवहु लादि ॥१॥ सभ ते उच उच ते उचो अंतु नही मरजाद ॥ बरनि न साकउ नानक महिमा पेखि रहे बिसमाद ॥२॥५५॥७८॥ (१२१६)

लेख दा आरंभ

लेख दा संखेप

लेख दा सार, निचोड़ जाँ मंतव

जे कर उपर लिखीआँ, गुरबाणी दीआँ कीरतनु संबंधी सिखिआवाँ नू डिकठा करीडे ताँ असी संखेप विच कहि सकदे हाँ कि:

- आम लोक गीताँ ते कीरतन विच बहुत भारी अंतर है। कीरतन दा मंतव है कि आपणे आप नू गुरु दे सनमुख भेट करना है ते करते दी सिफत सालाह करनी है, आपणे अंदर, उस अकाल पुरखु वरगे गुण पैदा करके आपणे जीवन नू सिधे रसते पाउंणा है ते इह मनुखा जनम सफल करना है।
- कीरतन दा मंतव इह है, कि आपणे मन नू गुरु दे सबद अनुसार सोझी देणी है, मन नू सिधे रसते ते पाउंणा है, ते नाल दी नाल काम ते होर विकाराँ ते काबू पाउंण लड़ी बिबेक बुधी हासल करनी है। गुरबाणी अनुसार कीरतन आपणे मन नू सेध देण लड़ी ते आपणे आप नू सुधारन लड़ी कीता जाँदा है।

- कीरतन दा मंतव मन ते काबू करना है, डिसे लड़ी कीरतन विच मन नूं खिंडण तों रोकण लड़ी डिशारे जाँ नचणा ट्पणाँ नहीं वरतिआ जाँदा है।
- गुरू अमरदास साहिब सरीर दे बाकी अंगाँ दे नाल नाल आपणे कंनों नूं वी इही समझाँदे हन कि, हे मेरे कंनो! अकाल पुरखु दी सिणति सालाह दी बाणी सुणिआ करो, किउंकि सदा थिर रहिण वाले अकाल पुरखु ने तुहानूं इही सुणन वासते इस संसार विच भेजिआ है।
- आतमक आनंद दी प्रापती उसे मनुख नूं हुंटी है, जिस दे कंन, जीभ, ते होर सारे गिआन डिंद्रे अकाल पुरखु दी सिणति सालाह विच मगन रहिंदे हन।
- अकाल पुरखु उनहाँ मनुखाँ दा बाणी गाउणा अते सुणना कबूल करदा है, जिनहाँ ने गुरू दे हुकम नूं बिलकुल सही तरीके नाल जाण लिआ ते उस उते अमल वी कीता है। अकाल पुरखु दे दर ते उनहाँ मनुखाँ दी चंगी सोभा हुंटी है, जिनहाँ मनुखाँ ने अकाल पुरखु दी सिणति सालाह नूं गुरबाणी दुआरा जाण लिआ ते उस दे नाल डूँघी साँझ पा लड़ी है।
- खाणे दा लाभ ताँ है, जे कर उस दे बणे जूसा दा असर सरीर दे हरेक अंग तक पहुंच जावे, फोकट पदारथ दा कोड़ी लाभ नहीं। क्ची बाणी वी फोकट पदारथ दी तरहाँ है, जिस नाल मन नूं कोड़ी सेध नहीं मिलदी है।
- अजेहा उँदम करना है, जिस दे करन नाल मन नूं विकाराँ दी मैल न लग सके, ते इह मन अकाल पुरखु दी सिणति सालाह विच टिक के विकाराँ दे हलिआँ वलों सुचेत रहे ते बिबेक बुधी वाला बण सके।
- मन दी सफाड़ी दा ताँ बड़ा सौखा ते सपूशत तरीका जपुजी साहिब विच अंकित है, “**भरीअै हथु पैरु तनु देह ॥ पाणी धोतै उतरसु खेह ॥ मूत पलीती कपडु होइ ॥ दे साबूण लड़ीअै एहु धोइ ॥ भरीअै मति पापा कै संगि ॥ एहु धोपे नावै कै रंगि ॥**”
- असल बैसनो उह है, जिस ने साध संगति विच टिक के अकाल पुरखु दी कीरत दुआरा, भाव अकाल पुरखु दे गुण गाड़िन करके, आपणे अंदरों सारे विकार दूर कर लड़े हन, “**सो बैसनो है अपर अपारु ॥ कह नानक जिनि तजे बिकारा॥**”
- अकाल पुरखु दी सिणति करनी इिक बहुत वड़ी करणी है, किउंकि, अकाल पुरखु दी सिणति सालाह करना ही अकाल पुरखु दा कीरतन करना है। अकाल पुरखु दी वडिआड़ी करन नाल ही अकाल पुरखु दे हुकमु ते रजा नूं समझ सकदे हाँ ते उस अनुसार चल सकदे हाँ। मनुखा जीवन दा मनोरथ वी अकाल पुरखु दी सिणति करनी ही है ताँ जो उस दे गुणा नूं समझ सकीडे, पछान सकीडे ते उस अकाल पुरखु दे हुकमु ते रजा अनुसार चल सकीडे।
- आपणे मन विच सदा अकाल पुरखु दा नामु रूपी अंम्रित सिंजदे रहो। अकाल पुरखु दा कीरतनु करन लड़ी हर वेले उस अकाल पुरखु दे गुण गाड़िन करदे रिहा करो।
- अकाल पुरखु दे मिलाप लड़ी साध संगति विच बैठ के अकाल पुरखु दे गुण गाड़िन करने हन ते आपणा हंकार तिआग के अकाल पुरखु दे गुण सिखणे ते अपनाउंणे हन।
- गुरू साहिब समझाँदे हन कि, सबद गुरू ने मैनु अचरज तमाशा विखा दिता है, इस लड़ी मै आपणे मन विच हर वेले अकाल पुरखु दी सिणति सालाह सुण के उस दे मिलाप दा आनंद माणदा रहिंदा हाँ।
- गहिणे बणाँउण लड़ी पहिला सोने नूं गरम करके नरम कीता जाँदा है, ताँ जो उस नूं चंगी तरहाँ ढालिआ जा सके। ठीक उसे तरहाँ कीरतन मन नूं पहिला मिठी आवाज़ जाँ राग दुआरा कोमल करदा है ते फिर उस अंदर सबद वीचार दुआरा गुण पैदा कर देंदा है।
- न्चण ट्पण नाल किसे उँची अवसथा ते नहीं अ्पड़िआ जा सकदा, ते ना ही उह सिध बण जाँदे हन। न्चणा कुदणा ताँ केवल मन दा इिक शौक है। अकाल पुरखु दा प्रेम केवल उनहाँ दे मन विच ही है, जिनहाँ दे मन विच अकाल पुरखु दा डर है।
- जे कर संगीत विच मसत हो के कीरतन सुणो ताँ झूमणाँ शुरु हो जाँदा है अते अ्खाँ मीटीआँ जाँदीआँ हन। जे कर गुरबाणी विच लीन हो के कीरतन सुणो ताँ मन सुचेत रहिंदाँ है अते गुरू साहिब किहड़ी सिखिआ देंदे हन, उस विच धिआन रहिंदाँ है। जे कर गुरबाणी अते उस दे अरथ भाव विच लीन हो के कीरतन सुणो ताँ अ्खाँ खुलीआँ रहिंदीआँ हन ते गुरबाणी विच धिआन रहिंदाँ है।
- गुरू गरंथ साहिब विच सारे सबदाँ दे सिरलेख विच इह खास तौर ते लिखिआ गिआ है कि सबद नूं किस राग विच ते किस तरहाँ गाड़िन करना है। इह हदाइत इस लड़ी लिखी गड़ी है ताँ जो सबद गाड़िन करन समें उस सबद दा अरथ भाव सही तरीके नाल समझ आ सके, सबद विच धिआन लगा रहे ते सबद दी ठीक वीचार लड़ी सेध मिलदी रहे।

- अकाल पुरखु दे कीरतन दी बरकति नाल ही विकाराँ तों बचाउ हो सकदा है। इस लड़ी कीरतन गुरू दे उपदेश, भाव गुरबाणी अनुसार ही करना है, ताँ ही मनुख दा उधार हो सकदा है।
- गुरू दे सबद दुआरा ही अकाल पुरखु दे गुण गाड़िन करने हन, उस दी सिणति सालाह करनी है ते गुरू दे सबद दी वीचार दुआरा ही उस अकाल पुरखु दे गुण समझ के आपणे अंदरों हउमै दूर करना है।
- गुरू दे सबद ते उस दी वीचार दुआरा साध संगति विच बैठ के अकाल पुरखु दे गुण गाड़िन करने हन ते समझणे हन, ताँ जो साडा मनुखा सरीर सबद वीचार दी बरकत नाल विकाराँ तों बच जावे ते सोने वरगा सुध हो सके, जीवन दा सही मारग समझ सकड़ीडे ते उस अनुसार चल सकड़ीडे।
- अकाल पुरखु दे भगत नूँ इही कार चंगी ल्गदी है, कि उह अकाल पुरखु दे प्रेम रंग विच मसत रहिंदा है, अकाल पुरखु नूँ अंग-संग वेख के, ते सबद वीचार दुआरा गुरू दी सेवा करके अकाल पुरखु दी सिणति सालाह विच ही प्रसंन रहिंदा है।
- जिस मनुख नूँ गुरू दी किरपा नाल आपणे आप बारे सोझी आ जाँदी है, ताँ इह जाण लवो कि उस दी तिश्ना मिट जाँदी है। जिहड़ा मनुख साधसंगत विच अकाल पुरखु दी सिणति सालाह करदा है, उह सारे रोगाँ तों बच जाँदा है। जिहड़ा मनुख हर रोज़ अकाल पुरखु दा सिर्फ कीरतन ही उँचारदा रहिंदा है, उह मनुख ग्रिहसत विच रहिंदा होइआ वी वासना तों रहित ते निरलेप रहिंदा है। जिस मनुख दी आस इक अकाल पुरखु उँते है, उस दी जमाँ वाली फाही कूटी जाँदी है। जिस मनुख दे मन विच अकाल पुरखु दे मिलण दी ताँघ है, उस मनुख नूँ फिर कोड़ी दुख पौह नहीं सकदा।
- गुरू दी संगत विच ही अकाल पुरखु दा कीरतनु गाड़िन करना है, ते अकाल पुरखु दे गुण गा के अकाल पुरखु दे नामु रूपी अंम्रित दा सुआद मानणा है।
- साध संगति विच रहि के सदा अकाल पुरखु दी सिणति सालाह करदे रहिणा चाहीदा है, किउंकि इस दी बरकति नाल मन दे भरम, परिवारक मोह ते चिंता, हउमै, माइआ दे जंजाल, आदिक, कोड़ी वी पोह नहीं सकदे, परंतू इह असथान गुरू पासों ही पाइआ जा सकदा है।
- अकाल पुरखु दे हुकमु नूँ पूरे सतिगुरू दुआरा ही समझिआ जा सकदा है, इस लड़ी कीरतनु वी सतिगुरू दे सबद दा ही हो सकदा है, सूची बाणी दा ही हो सकदा है।
- जिहड़े मनुख सिणति सालाह वाली सूची बाणी दुआरा हर वेले अकाल पुरखु दी सेवा भगती करदे रहिंदे हन, गुरू दे सबद दी बरकति नाल उनहाँ दे अंदर आतमक आनंद बणिआ रहिंदा है। इस लड़ी सेवा भगती पूरे गुरू दे सबद दुआरा, सूची बाणी अनुसार अकाल पुरखु गुण गाड़िन करन नाल ही हो सकदी है।
- उही भगत अडोल आतमक जीवन वाले बणदे हन, जिहड़े अकाल पुरखु दे मन विच पिआरे ल्गदे हन। उह अकाल पुरखु दे दर ते टिक के सूची बाणी दुआरा अकाल पुरखु दी सिणति सालाह करदे रहिंदे हन, गुरू दे सबद दी बरकति नाल उनहाँ दा आतमक जीवन सोहणा बण जाँदा है। इस लड़ी अकाल पुरखु दे कीरतन विच सिर्फ गुरू दे सबद दी सूची बाणी ही परवान है।
- इह सबद ही है, जिस दुआरा अकाल पुरखु नाल संबंध बणाइआ जाँ सकदा है, गुरू दे सबद दुआरा सदा अकाल पुरखु दी सिणति सालाह कीती जा सकदी है, गुरू दे सबद तों बिना कोड़ी मनुख अकाल पुरखु नाल साँझ नहीं पा सकदा है, इस लड़ी कीरतनु वी गुरू दे सबद दा ही हो सकदा है, किसे होर कूची बाणी दा नहीं हो सकदा है।
- कंनौ नाल मालक अकाल पुरखु दी सिणति सालाह सुणनी, जीभ नाल मालक अकाल पुरखु दा नामु चेतने करना, इह संत जनाँ दी इह नित दी कार होइआ करदी है।
- गुरबाणी विच सपूश्ट करके समझाइआ गिआ है कि अकाल पुरखु दी सिणति सालाह दे गीत गाड़िन करने हन ते उस करतार दे गुणाँ दी वीचार करनी है, (सोहिला = कीरति + बीचारो = कीरतन), कीरतन उथे ही है, जिथे “करते का होइ बीचारो” हुंदी है, इस लड़ी अकाल पुरखु दे गुण आपणे हिरदे विच लै के आउणे ही कीरतन है। कीरतन ताँ ही सफल है, जे कर हिरदे विच करते दी वीचार वी है।
- अकाल पुरखु दा नामु मिठा है, सभ रसाँ नालों वडा रस है, इस लड़ी हर वेले अकाल पुरखु दा नामु रस आपणे मन दुआरा, गिआन इंद्रिआँ दुआरा, अकाल पुरखु दी सिणति सालाह कर कर के पीणाँ चाहीदा है।
- दीनाँ दे दुख दूर करन वाला अकाल पुरखु जिस मनुख उते दइआल हुंदा है, उस मनुख दा इह मन अकाल पुरखु दी सिणति सालाह दे रंग विच रंगिआ रहिंदा है।

- गुरू दा सबद आपणे मन विच वसाण नाल मनुख दे अंदरों विकारों दा ज़हर दूर हो जाँदा है, ते गुरू दी संगति विच बैठिआँ कौड़ा सुभाउ मिठा हो जाँदा है। इस लड़ी गुरू दे चरनाँ विच लिव ला के अकाल पुरखु दी सिणति सालाह करिआ करो, किउंकि अकाल पुरखु दे नामु दा रस दुनीआ दे होर सभ रसाँ नालों मिठा है।
- गुरू दी किरपा नाल मनुख अकाल पुरखु दा कीरतन गाड़िन करदा है, गुरबाणी दुआरा अकाल पुरखु दी सिणति सालाह करदा है। इस दा नतीजा इह निकलदा है कि सतिगुरू दी किरपा नाल मनुख दे सारे दुख कलेश मिट जाँदे हन।
- आपणे मन नूं समझाणा है, कि तूं अकाल पुरखु दी इहो जिही सिणति सालाह करदा रहु, जेहड़ी तेरी इस ज़िंदगी विच वी कंम आवे, ते परलोक विच वी तेरे कंम आवे।
- **कीरतन ताँ ही किहा जा सकदा है, जे कर मनुख दा मन निरमल हो गिआ है, मनुख दा मन विकारों वलों सबद गुरू दा गिआन हासल करके जागरित हो गिआ है।**
- हर रोज़ दिन रात कीरतनु करदे रहिणा है, ते उह ताँ ही संभव है, जे कर असीं हर वेले गुरबाणी दुआरा अकाल पुरखु दी सिणति सालाह करदे रहिंदे हाँ।
- अकाल पुरखु दी सिणति सालाह आतमक जीवन देण वाला रस है, कोड़ी विरला भागाँ वाला मनुख ही इह अंम्रित रस पीदा है।
- **गुरू दे सबद दुआरा ही अकाल पुरखु दा नामु जपिआ जा सकदा है, गुरू दे सबद दुआरा ही अकाल पुरखु दा कीरतन हो सकदा है, ते गुरू दे सबद दुआरा ही अकाल पुरखु दे गुण गाड़े जा सकदे हन।**
- **कीरतन सिर्फ गुरू दे सबद दा ही हो सकदा है, भाव कीरतन सिर्फ सूची बाणी दा ही हो सकदा है, होर किसे तरहाँ दी क्ची बाणी दा कीरतन गुरमति अनुसार प्रवान नहीं है।**
- जेहड़ा मनुख सतिगुरू दी गुरबाणी गाड़िन करदा है, गुरबाणी नाल पिआर करदा है, गुरबाणी दुआरा अकाल पुरखु दे गुणाँ दी वीचार करदा है, गुरबाणी कीरतन दुआरा अकाल पुरखु दी सिणति सालाह करदा है, अकाल पुरखु उस मनुख दा मददगार बण जाँदा है, ते उस मनुख दा जीवन सुखदाड़ी ते आतमक आनंद वाला बण जाँदा है।
- पूरे सतिगुरू ने मेरे उते बज्श कीती है। सतिगुरू ने मैंनूं अकाल पुरखु दा नामु कीरतन करन लड़ी दिता है, जिस दी बरकति नाल मेरी उँची आतमक अवस्था बण गड़ी है। इस लड़ी अकाल पुरखु दे नामु दा कीरतन पूरे सतिगुरू दी बज्श नाल ही हो सकदा है।
- जिस थाँ ते अकाल पुरखु दी कथा कीरतनु वीचार, अकाल पुरखु दी सिणति सालाह बहुत हुंदी रहे, उह थाँ आतमक आनंद दा, आतमक अडोलता दा टिकाणा ते सोमा बण जाँदा है।
- साध संगति विच अकाल पुरखु दी सिणति सालाह दीआँ कथा कहाणीआँ बारे वीचार सुणी जाँदी है। उथे दिन रात हर वेले अकाल पुरखु दीआँ कथा कहाणीआँ हुंदीआँ रहिंदीआँ हन, कीरतन हुंदा रहिंदे है, ते आतमक आनंद लड़ी हुलारे पैदा करन वाली रौ सदा चलदी रहिंदी है।
- **गुरू दे सबद दुआरा अकाल पुरखु दी सिणति सालाह दा गीत गाड़िआ करो, किउंकि अकाल पुरखु नूं व्स करन दा इह सभ तों शेषट बीज मंत्र है।**
- गुरबाणी दे कीरतन दी बरकत नाल पैदा होड़ी इक रस जारी रहिण वाली सिणति सालाह दी रौ मनुख लड़ी सरमाड़िआ है, परंतू अकाल पुरखु ने इस ज्ञाने दी कुंजी संताँ (सबद गुरू) दे हथ विच र्खी होड़ी है।
- **जोती जोति समाण वेले गुरू अमरदास साहिब ने इही समझाड़िआ सी, कि हे भाड़ी! मेरे पिछों निरोल कीरतन करिए। केसो गोपाल अकाल पुरखु दे पंडिताँ नूं सूद घूलिए, भाव सतिसंगत नूं सूद घूलिए जो आ के अकाल पुरखु दी कथा वारता रूपी पुराण पड़हन, भाव गुरबाणी दुआरा अकाल पुरखु दी सिणति सालाह ते सबद दी वीचार करन।**
- इक्ले साज़ दी सुर विच सरीर झूमदा है ते मन सौ जाँदा है, इस लड़ी सिख ने अकाल पुरखु दे कीरतन नाल आतमिक तौर ते वी जागणाँ है, ताँ जो उस दे हिरदे विच अकाल पुरखु दे नामु दा चानण हो जावे। गुरू पासों अकाल पुरखु दी सिणति सालाह दी ज़ेर मंगणा, होर सारीआँ मंगाँ नालों वधीआ मंग है। जिहड़ा मनुख अकाल पुरखु दी सरन विच आ जाँदा है, उस नूं हरेक तरहाँ दा सोहणा गुण प्रापत हो जाँदा है।
- गुरू दी सेवा, भाव गुरू दी दूसी होड़ी सबद वीचार ही विकारों तों ज्लासी करवाउंण लड़ी सहाड़ी हुंदी है, ते जेहड़ा मनुख हर वेले अकाल पुरखु दा कीरतनु, भाव अकाल पुरखु दी सिणति सालाह करदा रहिंदे है, उह विकारों तों मुक्त हो जाँदा है।

- कीरतनु ताँ हो सकदा है, जे कर पूरे गुरू दुआरा अकाल पुरखु दी सिणति सालाह करन नाल, अकाल पुरखु मनुख दे चित विच, भाव उस मनुख दे हिरदे घर विच व्स जाँदा है।
- जिस सतिसंग घर विच अकाल पुरखु दी सिणति सालाह हुंटी है, उस घर नूं साँभ र्ख, उस सतिसंग दा आसरा लड़ी र्ख, डिसे विच तेरी भलाडी है।
- हे मेरे मन! तूं गुरू दे सबद दी वीचार दुआरा अकाल पुरखु दी इहो जिही सिणति सालाह करदा रहु, जेहड़ी तेरी इस जिंदगी विच वी कंम आवे, ते परलोक विच वी तेरे कंम आवे।
- **अखंड कीरतनु ताँ ही हो सकदा है, जे कर मनुख गुरू दे सबद दी वीचार दुआरा सेवा विच लुगिआ रहे ते अकाल पुरखु दी सिणति सालाह दुआरा उस दे नामु विच सदा लीन रहे।**
- जदों मैं तेरा कीरतनु गाड़िन करदा हाँ, तेरी सिणति सालाह दे गीत गाड़िन करदा हाँ, ताँ मैं जोगीआँ वाला जोग प्राप्त हो जाँदा है। दुनीआ वाला सुख ते एकीरी वाला सुख दोवें ही मैं अकाल पुरखु दी सिणति सालाह विचों मिल जाँदे हन।
- सिमरन करन लड़ी अकाल पुरखु दे निता प्रती गुण गाड़िन करने हन, जिनहाँ नाल सभ किसम दे भरम ते वहिम नास हो सकण।
- अकाल पुरखु दे भगत बणन लड़ी उस अकाल पुरखु दी सिणति सालाह दुआरा उस नूं चेत करना है, कीरतन गाड़िन करन लड़ी अकाल पुरखु दा सुख देण वाला नामु जपणा है, ताँ जो मन अंदरों विकार दूर कीते जा सकण।
- **अकाल पुरखु दे नामु दा कीरतन हर रोज करनाँ है, ते अकाल पुरखु दी सिणति सालाह तों बिना डिक् खिन पल वासते वी नहीं रहिणा है।**
- हे अकाल पुरखु! हे मेरे सुआमी! मेरे अंदर ताँघ है, कि मैं अर्खाँ नाल तेरा दरशन करदा रहाँ, जीभ नाल तेरा नामु जपदा रहाँ, कंनॉ नाल दिन रात तेरी सिणति सालाह सुणदा रहाँ, ते हिरदे विच तूम मैं हमेशाँ पिआरा लुगदा रहे।
- **अकाल पुरखु दा कीरतन ही आतमक जीवन देण वाला रस है, इस लड़ी हमेशाँ अकाल पुरखु दा कीरतन ही गाणा चाहीदा है, ते जिहड़ा मनुख अकाल पुरखु दा कीरतन गाड़िन करदा रहिंदा है, उस दे अंदर दिन रात आतमक आनंद दे वाजे वुजदे रहिंदा हन।**

लेख दा आरंभ

लेख दा संखेप

लेख दा सार, निचोड़ जाँ मंतव

गुरबाणी दीआँ कीरतनु सबंधी सिखिआवाँ दा उपर लिखिआ संखेप सानूं सपुश्ट करके समझादा है, कि गुरू गरंथ साहिब विच अंकित गुरबाणी अनुसार कीरतन दे हेठ लिखे मुख मंतव हन:

- (१) गुरू गरंथ साहिब विच अंकित गुरबाणी दुआरा अकाल पुरखु दे गुण गाड़िन करने हन:
- (२) गुरबाणी दुआरा अकाल पुरखु दे गुणाँ दी वीचार करनी है:
- (३) अकाल पुरखु दे हुकमु नूं पूरे सतिगुरू दुआरा समझणा है ते अकाल पुरखु दे हुकमु ते रजा अनुसार चलणा है:
- (४) मन नूं विकाराँ दे हलिआँ वलों सुचेत करन लड़ी बिबेक बुधी हासल करनी है:
- (५) अकाल पुरखु दे नामु रूपी अंम्रित दा सुआद मानणा है:
- (६) हर वेले अकाल पुरखु दा कीरतनु करना है:
- (७) साध संगति विच बैठ के अकाल पुरखु दे गुण गाड़िन करने हन:
- (८) कीरतन दा मंतव मन ते काबू करना ते मन नूं खिंडण तों रोकणा है:
- (९) कीरतन दुआरा सारीआँ गिआन इंदरीआँ नूं विकारा तों रोकणा है:
- (१०) कीरतनु पूरे गुरू दे सबद दुआरा, सूची बाणी दा ही हो सकदा है:

(१) गुरू गरंथ साहिब विच अंकित गुरबाणी दुआरा अकाल पुरखु दे गुण गाड़िन करने हन:

आपणे आप नूं सबद गुरू दे सनमुख भेट करना है, गुरू दे सबद दुआरा ही अकाल पुरखु दे गुण गाड़िन करने हन, अकाल पुरखु दी सिफत सालाह करनी है, गुरू दे सबद दी वीचार दुआरा ही उस अकाल पुरखु दे गुण समझ के आपणे अंदरों हउमै ते होर विकार दूर करने हन, अकाल पुरखु वरगे गुण आपणे अंदर पैदा करके आपणे जीवन नूं सिधे रसते पाउंणा है ते इह मनुखा जनम सफल करना है। आपणे मन नूं समझणा है, कि तूं अकाल पुरखु दी इहो जिही सिणति सालाह करदा रहु, जेहड़ी तेरी इस जिंदगी विच वी कंम आवे, ते परलोक विच वी तेरे कंम आवे। कीरतनु ताँ हो सकदा है, जे कर पूरे गुरू दुआरा

अकाल पुरखु दी सिणति सालाह करन नाल, अकाल पुरखु मनुख दे चित विच, भाव उस मनुख दे हिरदे घर विच व्स जाँदा है।

(२) गुरबाणी दुआरा अकाल पुरखु दे गुणाँ दी वीचार करनी है:

गुरबाणी दुआरा अकाल पुरखु दी सिणति सालाह दे गीत गाड़िन करने हन ते उस करतार दे गुणाँ दी वीचार करनी है, (कीरति + वीचारो = कीरतन), अकाल पुरखु दे गुण आपणे हिरदे विच लै के आउणे ही कीरतन है। कीरतन ताँ ही सफल है, जे कर हिरदे विच करते दी वीचार वी है। गुरू दे सबद ते उस दी वीचार दुआरा साध संगति विच बैठ के अकाल पुरखु दे गुण गाड़िन करने हन ते समझणे हन, ताँ जो साडा मनुखा सरीर सबद वीचार दी बरकत नाल विकाराँ तों बच जावे ते सोने वरगा सुध हो सके, जीवन दा सही मारग समझ सकडीडे ते उस अनुसार चल सकडीडे। जेहड़ा मनुख सतिगुरू दी गुरबाणी गाड़िन करदा है, गुरबाणी नाल पिआर करदा है, गुरबाणी दुआरा अकाल पुरखु दे गुणाँ दी वीचार करदा है, गुरबाणी कीरतन दुआरा अकाल पुरखु दी सिणति सालाह करदा है, अकाल पुरखु उस मनुख दा मददगार बण जाँदा है, ते उस मनुख दा जीवन सुखदाडी ते आतमक आनंद वाला बण जाँदा है।

(३) अकाल पुरखु दे हुकमु नूं पूरे सतिगुरू दुआरा समझणा है ते अकाल पुरखु दे हुकमु ते रजा अनुसार चलणा है:

अकाल पुरखु उनहाँ मनुखाँ दा बाणी गाउणा अते सुणना कबूल करदा है, जिनहाँ ने गुरू दे हुकम नूं बिलकुल सही तरीके नाल जाण लिआ ते उस उते अमल वी कीता है। अकाल पुरखु दी वडिआडी करन नाल ही अकाल पुरखु दे हुकमु ते रजा नूं समझ सकदे हाँ ते उस अनुसार चल सकदे हाँ। मनुखा जीवन दा मनोरथ वी अकाल पुरखु दी सिणति करनी ही है, ताँ जो उस दे गुणा नूं समझ सकीडे, पछान सकीडे ते उस अकाल पुरखु दे हुकमु ते रजा अनुसार चल सकीडे। अकाल पुरखु दे हुकमु नूं पूरे सतिगुरू दुआरा ही समझिआ जा सकदा है, इस लडी कीरतनु वी सतिगुरू दे सबद दा ही हो सकदा है, सूची बाणी दा ही हो सकदा है।

(४) मन नूं विकाराँ दे हलिआँ वलों सुचेत करन लडी बिबेक बुधी हासल करनी है:

कीरतन दा मुख मंतव इह है, कि आपणे मन नूं गुरू दे सबद अनुसार सोझी देणी है, मन नूं सिधे रसते ते पाउंणा है, ते नाल दी नाल काम ते होर विकाराँ ते काबू पाउंण लडी बिबेक बुधी हासल करनी है। मन नूं सिधे रसते ते पाउंणा है, ताँ जो मन नूं विकाराँ दी मैल न लग सके, ते इह मन अकाल पुरखु दी सिणति सालाह विच टिक के काम ते विकाराँ दे हलिआँ वलों सुचेत रहे ते बिबेक बुधी वाला बण सके।

(५) अकाल पुरखु दे नामु रूपी अंम्रित दा सुआद मानणा है:

अकाल पुरखु दा नामु मिठा है, सभ रसाँ नालों वडा रस है, इस लडी हर वेले अकाल पुरखु दा नामु रस आपणे मन दुआरा, गिआन इंद्रिआँ दुआरा, अकाल पुरखु दी सिणति सालाह कर कर के पीणाँ चाहीदा है। गुरू दी संगत विच ही अकाल पुरखु दा कीरतनु गाड़िन करना है, ते अकाल पुरखु दे गुण गा के अकाल पुरखु दे नामु रूपी अंम्रित दा सुआद मानणा है। गुरू दे सबद दुआरा ही अकाल पुरखु दा नामु जपिआ जा सकदा है, गुरू दे सबद दुआरा ही अकाल पुरखु दा कीरतन हो सकदा है, ते गुरू दे सबद दुआरा ही अकाल पुरखु दे गुण गाइ जा सकदे हन। अकाल पुरखु दे भगत बणन लडी उस अकाल पुरखु दी सिणति सालाह दुआरा उस नूं चेत करना है, कीरतन गाड़िन करन लडी अकाल पुरखु दा सुख देण वाला नामु जपणा है, ताँ जो मन अंदरों विकार दूर कीते जा सकण। अकाल पुरखु दी सिणति सालाह आतमक जीवन देण वाला रस है, कोडी विरला भागाँ वाला मनुख ही इह अंम्रित रस पीदा है।

(६) हर वेले अकाल पुरखु दा कीरतनु करना है:

अखंड कीरतनु ताँ ही हो सकदा है, जे कर मनुख गुरू दे सबद दी वीचार दुआरा सेवा विच लुगिआ रहे ते अकाल पुरखु दी सिणति सालाह दुआरा उस दे नामु विच सदा लीन रहे। इस लडी हर रोज़ दिन रात कीरतनु करदे रहिणा है, ते उह ताँ ही संभव है, जे कर असी हर वेले गुरबाणी दुआरा अकाल पुरखु दी सिणति सालाह करदे रहिंदे हाँ। आपणे मन विच सदा अकाल पुरखु दा नामु रूपी अंम्रित सिंजदे रहो, ताँ जो सभ किसम दे भ्रम ते वहिम नास हो सकण। जिहड़ा मनुख अकाल पुरखु दा कीरतन गाड़िन करदा रहिंदा है, उस दे अंदर दिन रात आतमक आनंद दे वाजे वजदे रहिंदे हन। अकाल पुरखु दे भगत सबद वीचार दुआरा गुरू दी सेवा करके अकाल पुरखु दी सिणति सालाह विच ही प्रसंन रहिंदे हन। अकाल पुरखु दे भगत

नूं इही कार चंगी ल्गदी है, कि उह अकाल पुरखु दे प्रेम रंग विच मसत रहिंदा है, अकाल पुरखु नूं अंग-संग वेख के, ते सबद वीचार दुआरा गुरू दी सेवा करके अकाल पुरखु दी सिणति सालाह विच ही प्रसंन रहिंदा है। सेवा भगती पूरे गुरू दे सबद दुआरा, सूची बाणी अनुसार अकाल पुरखु गुण गाड़िन करन नाल ही हो सकदी है। इस लड़ी अकाल पुरखु दे नामु दा कीरतन हर रोज करनां है, ते अकाल पुरखु दी सिणति सालाह तों बिना इक खिन पल वासते वी नहीं रहिणा है।

(७) साध संगति विच बैठ के अकाल पुरखु दे गुण गाड़िन करने हन:

अकाल पुरखु दे मिलाप लड़ी साध संगति विच बैठ के अकाल पुरखु दे गुण गाड़िन करने हन ते आपणा हंकार तिआग के अकाल पुरखु दे गुण सिखणे ते अपनाउंणे हन। अकाल पुरखु दी वडिआड़ी करन नाल ही अकाल पुरखु दे हुकमु ते रजा नूं समझ सकदे हां ते उस अनुसार चल सकदे हां। गुरू दे सबद ते उस दी वीचार दुआरा साध संगति विच बैठ के अकाल पुरखु दे गुण गाड़िन करने हन ते समझणे हन, तां जो साडा मनुखा सरीर सबद वीचार दी बरकत नाल विकारां तों बच जावे ते सोने वरगा सुध हो सके, जीवन दा सही मारग समझ सकडींइ ते उस अनुसार चल सकडींइ। साध संगति विच रहि के सदा अकाल पुरखु दी सिणति सालाह करदे रहिण नाल मन दे भरम, परिवारक मोह ते चिंता, हजुमै, माड़िआ दे जंजाल, आदिक, कोडी वी पोह नहीं सकदे, परंतू इह असथान गुरू पासों ही पाड़िआ जा सकदा है। साध संगति विच अकाल पुरखु दी सिणति सालाह दीआं कथा कहाणीआं बारे वीचार सुणी जांदी है। उथे दिन रात हर वेले अकाल पुरखु दीआं कथा कहाणीआं हुंदीआं रहिंदीआं हन, कीरतन हुंदा रहिंदा है, ते आतमक आनंद लड़ी हुलारे पैदा करन वाली रौ सदा चलदी रहिंदी है। जिस थां ते अकाल पुरखु दी कथा कीरतनु वीचार, अकाल पुरखु दी सिणति सालाह बहुत हुंदी रहे, उह थां आतमक आनंद अते आतमक अडोलता दा टिकाणा ते सोमा बण जांदा है।

(८) कीरतन दा मंतव मन ते काबू करना ते मन नूं खिंडण तों रोकणा है:

कीरतन दा मंतव मन ते काबू करना है, इसे लड़ी कीरतन विच मन नूं खिंडण तों रोकण लड़ी इशारे जां नचणा ट्पणां नहीं वरतिआ जांदा है। नचणा कुदणा तां केवल मन दा इक शौक है। अकाल पुरखु दा प्रेम केवल उनहाँ दे मन विच ही है, जिनहाँ दे मन विच अकाल पुरखु दा डर है। कीरतन मन नूं पहिला मिठी आवाज़ जां राग दुआरा कोमल करदा है ते फिर उस अंदर सबद वीचार दुआरा गुण पैदा कर देंदा है। आपणे आप नूं गुरू दे सनमुख भेट करना है, आपणे मन नूं गुरू दे सबद अनुसार सोझी देणी है, मन नूं सिधे रसते ते पाउंणा है, ते नाल दी नाल काम ते होर विकारां ते काबू पाउंण लड़ी बिबेक बुधी हासल करनी है। इक्ले साज़ दी सुर विच सरीर झूमदा है ते मन सौ जांदा है, इस लड़ी सिख ने अकाल पुरखु दे कीरतन नाल आतमिक तौर ते वी जागणां है, तां जो उस दे हिरदे विच अकाल पुरखु दे नामु दा चानण हो जावे। जे कर संगीत विच मसत हो के कीरतन सुणो तां झूमणां शूर हो जांदा है अते अर्खां मीटीआं जांदीआं हन। जे कर गुरबाणी विच लीन हो के कीरतन सुणो तां मन सुचेत रहिंदां है अते गुरू साहिब किहड़ी सिखिआ देंदे हन, उस विच धिआन रहिंदां है। जे कर गुरबाणी अते उस दे अरथ भाव विच लीन हो के कीरतन सुणो तां अर्खां खुलीआं रहिंदीआं हन ते गुरबाणी विच धिआन रहिंदां है। गुरू ग्रंथ साहिब विच सारे सबदां दे सिरलेख विच इह खास तौर ते लिखिआ गिआ है कि सबद नूं किस राग विच ते किस तरहाँ गाड़िन करना है। इह हदाइत इस लड़ी लिखी गडी है तां जो सबद गाड़िन करन समें उस सबद दा अरथ भाव सही तरीके नाल समझ आ सके, सबद विच धिआन ल्गा रहे ते सबद दी ठीक वीचार लड़ी सेध मिलदी रहे। कीरतन तां ही किहा जा सकदा है, जे कर मनुख दा मन निरमल हो गिआ है, मनुख दा मन विकारां वलों सबद गुरू दा गिआन हासल करके जागरित हो गिआ है।

(९) कीरतन दुआरा सारीआं गिआन इंद्रीआं नूं विकारा तों रोकणा है:

गुरू अमरदास साहिब सरीर दे बाकी अंगों दे नाल नाल आपणे कंनों नूं वी इही समझांदे हन कि, हे मेरे कंनो! अकाल पुरखु दी सिणति सालाह दी बाणी सुणिआ करो, किउंकि सदा थिर रहिण वाले अकाल पुरखु ने तुहानूं इही सुणन वासते इस संसार विच भेजिआ है। आपणे कंन, जीभ, ते होर सारे गिआन इंद्रे अकाल पुरखु दी सिणति सालाह विच मगन करने हन। कंनों नाल मालक अकाल पुरखु दी सिणति सालाह सुणनी, जीभ नाल मालक अकाल पुरखु दा नामु चेतें करना, इह संत जनां दी इह नित दी कार होइआ करदी है। आतमक आनंद दी प्रापती उसे मनुख नूं हुंदी है, जिस दे कंन, जीभ, ते होर सारे गिआन इंद्रे अकाल पुरखु दी सिणति सालाह विच मगन रहिंदे हन। गुरू दा सबद आपणे मन विच वसाण नाल मनुख दे अंदरों विकारां दा जहर दूर हो जांदा है, ते गुरू दी संगति विच बैठिआं कौड़ा सुभाउ मिठा हो जांदा है। जिस मनुख नूं गुरू दी किरपा नाल आपणे आप बारे सोझी आ जांदी है, तां इह जाण लवो कि उस दी त्रिश्ना मिट जांदी है। जिहड़ा मनुख साधसंगत विच

अकाल पुरखु दी सिणति सालाह करदा है, उह सारे रोगाँ तौ बच जाँदा है। जिहड़ा मनुख हर रोज़ अकाल पुरखु दा सिर्फ कीरतन ही उँचारदा रहिंदा है, उह मनुख ग्रिहसत विच रहिंदा होइआ वी वासना तौ रहित ते निरलेप रहिंदा है। जिस मनुख दी आस इक अकाल पुरखु उँते है, उस दी जमाँ वाली फाही कटी जाँदी है। जिस मनुख दे मन विच अकाल पुरखु दे मिलण दी ताँघ है, उस मनुख नूँ फिर कोड़ी दुख पोंह नहीं सकदा। अजेहा उँदम करना है, जिस दे करन नाल मन नूँ विकाराँ दी मैल न ल्ग सके, ते इह मन अकाल पुरखु दी सिणति सालाह विच टिक के विकाराँ दे हलिआँ वलों सुचेत रहे ते बिबेक बुधी वाला बण सके। उस वासते इही अरदास करनी है कि, हे अकाल पुरखु! हे मेरे सुआमी! मेरे अंदर ताँघ है, कि मैँ अखाँ नाल तेरा दरशन करदा रहाँ, जीभ नाल तेरा नामु जपदा रहाँ, कंनाँ नाल दिन रात तेरी सिणति सालाह सुणदा रहाँ, ते हिरदे विच तूम मैँनूँ हमेशाँ पिआरा ल्गदा रहे।

(१०) कीरतनु पूरे गुरू दे सबद दुआरा, सूची बाणी दा ही हो सकदा है:

इह सबद ही है, जिस दुआरा अकाल पुरखु नाल सबंध बणाइआ जाँ सकदा है, गुरू दे सबद दुआरा सदा अकाल पुरखु दी सिणति सालाह कीती जा सकदी है, गुरू दे सबद तौँ बिना कोड़ी मनुख अकाल पुरखु नाल साँझ नहीं पा सकदा है, इस लड़ी कीरतनु वी गुरू दे सबद दा ही हो सकदा है, किसे होर क्ची बाणी दा नहीं हो सकदा है। कीरतन गुरू दे उपदेश भाव गुरबाणी अनुसार ही करना है, ताँ ही मनुख दा उधार हो सकदा है। जिहड़े मनुख सिणति सालाह वाली सूची बाणी दुआरा हर वेले अकाल पुरखु दी सेवा भगती करदे रहिंदे हन, गुरू दे सबद दी बरकति नाल उनहाँ दे अंदर आतमक आनंद बणिआ रहिंदा है। उही भगत अडोल आतमक जीवन वाले बणदे हन, जिहड़े अकाल पुरखु दे दर ते टिक के सूची बाणी दुआरा अकाल पुरखु दी सिणति सालाह करदे रहिंदे हन, गुरू दे सबद दी बरकति नाल उनहाँ दा आतमक जीवन सोहणा बण जाँदा है। गुरबाणी दे कीरतन दी बरकत नाल पैदा होइी इक रस जारी रहिण वाली सिणति सालाह दी रौ मनुख लड़ी सरमाइआ है, परंतूँ अकाल पुरखु ने इस ज्ञाने दी कुंजी संताँ (सबद गुरू) दे हथ विच र्खी होइी है। गुरू दी किरपा नाल मनुख अकाल पुरखु दा कीरतन गाड़िन करदा है, गुरबाणी दुआरा अकाल पुरखु दी सिणति सालाह करदा है। इस दा नतीजा इह निकलदा है कि सतिगुरू दी किरपा नाल मनुख दे सारे दुख कलेश मिट जाँदे हन। खाणे दा लाभ ताँ है, जे कर उस दे बणे जूसा दा असर सरीर दे हरेक अंग तक पहुंच जावे, फोकट पदारथ दा कोड़ी लाभ नहीं। क्ची बाणी वी फोकट पदारथ दी तरहाँ है, जिस नाल मन नूँ कोड़ी सेध नहीं मिलदी है। इस लड़ी कीरतन सिर्फ गुरू दे सबद दा ही हो सकदा है, भाव कीरतन सिर्फ सूची बाणी दा ही हो सकदा है, होर किसे तरहाँ दी क्ची बाणी दा कीरतन गुरमति अनुसार प्रवान नहीं है।

समुचे तौर ते गुरू गरंथ साहिब विच अंकित गुरबाणी अनुसार गुरबाणी कीरतनु दी प्रीभाशा इह है:

गुरू गरंथ साहिब विच अंकित गुरबाणी दुआरा अकाल पुरखु दे गुण गाड़िन करने, गुरबाणी दुआरा अकाल पुरखु दे गुणाँ दी वीचार करनी, अकाल पुरखु दे हुकमु नूँ पूरे सतिगुरू दुआरा समझणा ते अकाल पुरखु दे हुकमु ते रजा अनुसार चलणा, मन नूँ विकाराँ दे हलिआँ वलों सुचेत करन लड़ी बिबेक बुधी हासल करनी, अकाल पुरखु दे नामु रूपी अंप्रित दा सुआद मानणा, हर वेले अकाल पुरखु दा कीरतनु करना, साध संगति विच बैठ के अकाल पुरखु दे गुण गाड़िन करने, मन ते काबू करना ते मन नूँ खिंडण तौँ रोकणा, सारीआँ गिआन इंदरीआँ नूँ विकारा तौँ रोकणा अते कीरतनु पूरे गुरू दे सबद दुआरा, सूची बाणी दा ही ही हो सकदा है।

“वाहिगुरू जी का जलसा वाहिगुरू जी की फतिह”

(डा: सरबजीत सिंघ) (Dr. Sarbjit Singh)

RH1 / E-8, Sector-8, Vashi, Navi Mumbai - 400703.

Email = sarbjitsingh@yahoo.com,

Web = <http://www.geocities.ws/sarbjitsingh>, <http://www.sikhmarg.com/article-dr-sarbjit.html>